जनवरी 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

सारी दुनिया देखती रही, एकता के स्पंदन फैले,
बल-खुमारी के इस अवसर पर, भरपूर अनुभव हुए!

''जोवा जेवी दुनिया''

वर्ष : 14 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 159
जनवरी 2019
Total 36 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2018
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सूत्रों में पिरोई 'ब्रह्मचर्य' की समझ

संपादकीय

अनंत जन्मों से जीव अब्रह्मचर्य के विषय रूपी कीचड़ में अल्प सुख के लालच से लथपथ हुआ, खुद का बिगाड़ा और उसमें गहरे फँस गया। उसके बावजूद भी उसमें से बाहर निकलने का मन ही नहीं होता, वह भी आश्चर्य है न! और वास्तव में कुछ लोग इस कीचड़ में से बाहर निकलना चाहते हैं लेकिन मार्ग नहीं मिलने के कारण ज़बरदस्ती फँसे हुए हैं। यह विषय रोग 'आत्मज्ञान' के बगैर सर्वांश रूप से निर्मूल हो ही कैसे सकता है? वह तो जब प्रत्यक्ष ज्ञानी पुरुष से भेंट हो, तब उनके द्वारा प्राप्त 'आत्मज्ञान' से ही इस विषय की दुविधा का अंत आता है!

तमाम शास्त्रों ने आत्म स्वरूप की संपूर्ण अनुभूति के द्वार तक पहुँचने के लिए 'सर्व संग परित्याग' की अनिवार्यता बताई है लेकिन इस 'अक्रम विज्ञान' ने एक नया ही अभिगम सर्जित किया है कि खुद की विवाहित स्त्री का संग व प्रसंग होने के बावजूद भी असंग आत्मा का अनुभव कर सकते हैं! जिन्हें भी ब्रह्मचर्य सिद्ध करना हो, वे पुरुषार्थ और पराक्रम द्वारा, मोक्षमार्ग में 'अक्रम विज्ञान की' गहरी समझ के द्वारा जागृति की पराकाष्ठा तक पहुँच सकते हैं!

परम पूज्य दादाश्री द्वारा प्रकट हुआ 'अक्रम विज्ञान' विवाहितों से ऐसा नहीं कहता कि 'विषय छोड़ दो', परंतु निर्विकार-अनासक्त स्वभावी आत्म स्वरूप के प्रति दृष्टि प्राप्त होने के परिणाम स्वरूप 'खुद को' विषय से विरक्त करके 'स्व' में रमणता करवाता है! अर्थात् विषय नहीं छोड़ना है लेकिन विषय व विषयी से खुद को अलग हो जाना है। आसान और सटीक, सीधा और सरल मार्ग इस कलिकाल के पुण्यशाली जीवों के लिए अंतिम तारक 'लिफ्ट' के रूप में उदय हुआ है।

प्रस्तुत अंक में विषय के स्वरूप को समझकर छेदने के लिए एक नए अभिगम से दादाश्री की वाणी का संकलन हुआ है। जिसमें विषय को निर्मूल करने की समझ देते हुए कुछ आप्तसूत्रों के मोतियों की माला बनाई गई है। आप्त का अर्थ क्या है? संसार में और ठेठ मोक्ष में जाने तक हर प्रकार से विश्वास करने योग्य! और शास्त्रों में सूत्र का आर्थ क्या है? 'सौ मन सूत में से तीन रत्ती सोना गूँथकर वापस उसमें से शुद्ध सोने को निकालना।' जबकि यहाँ पर सूत्र के रूप में गुँथी हुई यह वाणी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाषा की सीमा से परे है। ज्ञानी का प्रत्येक शब्द, मुद्रा व चेष्टाओं में अद्‌भुत रहस्य है। श्रीमद् राजचंद्र ने बार-बार उसका अवगाहन करने को कहा है ज्ञानी का हर एक वाक्य शास्त्र है और वे सूत्र अर्थात् 'थोड़े में बहुत सारा' सीधा सोना ही समाया हुआ है, ऐसा समझना है। इस तरह से विषय से विरक्त होने के लिए दादाश्री के सूत्र यहाँ पर संकलित हुए हैं। सूत्र के साथ-साथ, उस सूत्र से संबंधित दादाश्री की वाणी का मंथन करके, महात्मा गहराई पूर्वक उनका अवगाहन करके विषय के सुख की बिलीफ को छेदकर, खुद के सनातन सुख का अनुभव करे, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सूत्रों में पिरोई 'ब्रह्मचर्य' की समझ

आप्तसूत्र- 668

विषय किसे कहा जाता है? जिसमें मन-वचन-काया की एकात्मता हो जाए, वह। अगर मन-वचन-काया में जो एकाकार नहीं हुआ, वह 'निर्विषय'!

विषय किसे कहते हैं? जिस-जिस बारे में मन प्रफुल्लित हो जाए, वह विषय कहलाता है। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार जिस-जिस में तन्मयाकार हो जाए, वे विषय हैं। जहाँ एकाकार हो जाए, वे विषय हैं। विषयों के विचार आना स्वाभाविक है। ऐसा होना परमाणुओं का *गलन* (डिस्चार्ज होना) है। पहले किए गए *पूरण* (चार्ज होना) का ही *गलन* है लेकिन उसमें तू तन्मयाकार हुआ, उसमें तुझे अच्छा लगा, वह विषय है, वह नुकसानदेह है।

विषय के दो प्रकार हैं, एक विषयी विषय और दूसरा निर्विषयी विषय।

विषय किसे कहते हैं? बिगिनिंग में (शुरू में) भी अच्छा लगे और एन्ड में भी अच्छा लगे। विषय कोई चीज़ नहीं है, लेकिन वह तो परमाणुओं का फोर्स है। जिन-जिन परमाणुओं को तूने अत्यंत भाव से, तन्मयाकार होकर खींचा है, उनका *गलन* होते समय तू फिर से उतना ही तन्मयाकार हो जाता है, वही विषय है। फिर चाहे कोई भी सब्जेक्ट हो, उसी में लीन रहता है। वे सभी विषय हैं। जिसने तप का विषय लिया, त्याग का विषय लिया और उसी में तन्मयाकार रहे तो, वह भी विषय है। अरे! विषयों को लेकर विषयी बनकर मोक्ष कैसे होगा? निर्विषयी बन, तब मोक्ष होगा।

विषय ऐसी चीज़ है कि यदि उसमें एकाग्रता हो जाए तो आत्मा को भूल जाए इसलिए यह गाँठ इस प्रकार से हानिकारक है। वह सिर्फ इसीलिए कि जब वह गाँठ फूटती है तब एकाग्रता हो जाती है। एकाग्रता हो जाए तब वह विषय कहलाता है। एकाग्रता हुए बगैर विषय कहलाएगा ही नहीं न! जब वह गाँठ फूटे, तब इतनी अधिक जागृति रहनी चाहिए कि विषय का विचार आते ही उखाड़कर फेंक दे, तो उसे वहाँ पर एकाग्रता नहीं होगी। यदि एकाग्रता नहीं है तो वहाँ पर विषय है ही नहीं। तो वह गाँठ कहलाती है, जब वह गाँठ खत्म हो जाएगी तब काम होगा।

निर्विषय विषय किसे कहा गया है? इस जगत् में निर्विषयी विषय हैं। इस शरीर की ज़रूरत के लिए जो कुछ दाल-चावल-सब्ज़ी-रोटी, जो कुछ मिले वह खाओ। वह विषय नहीं है। विषय कब कहा जाता है? कि जब तुम लुब्धमान हो जाओ तब विषय कहलाता है, वर्ना वह विषय नहीं है, वह निर्विषयी विषय है। अत: जो कुछ इस जगत् में आँखों से दिखाई देता है, वह सारा विषय नहीं है। लुब्धमान हो जाए, तभी विषय है।

जिस विषय में ध्यान नहीं होता, बिल्कुल लक्ष (जागृति) ही नहीं होता, उसे निर्विषयी विषय कहते हैं।

सच्चा सुख नहीं मिला है, इसलिए ये सभी विषय भोग रहे हैं, वर्ना विषय क्यों भोगते? आत्मा विषयी है ही नहीं, आत्मा निर्विषयी है। यह तो कर्मों के प्रताप से दु:ख होता है, वह सहन नहीं होने की वजह से ऐसे गटर में हाथ डालते हैं। गटर में मुँह डालकर गटर की गंदगी पीते हैं। आपको ज्ञान नहीं था इसलिए सहन नहीं होता था, अब यह ज्ञान दिया है तो आप में सहन करने की शक्ति उत्पन्न हो गई है। आपको जुदापन का भाव रह सकता है। तो फिर विषय क्यों होने चाहिए? लेकिन फिर भी परिणाम कोई भी नहीं बदल सकता, क्योंकि ये *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) परिणाम हैं और यह तो रिज़ल्ट हैं। रिज़ल्ट नहीं बदला जा सकता लेकिन रिज़ल्ट पर खेद, खेद और खेद रहे तो आप छूट जाओगे। आपको यदि खेद है, तो आप मुक्त हो और रिज़ल्ट में एकाकार हो तो बंधन है।

जिसका जिस विषय में ध्यान रहता है, वह उसमें बहुत ही चौकन्ना रहता है। उसमें तो विशेष रूप से रहता ही है। लोग अपने-अपने विषय में ही मस्त रहते हैं, और वहीं पर वे बुद्धू जैसे दिखाई देते हैं, क्योंकि उसी में तन्मयाकार हुए हैं। आत्मा निर्विषयी है। पूरा जगत् विषयों से भरा हुआ है, उनमें से जिसे जो विषय पसंद आया उसी की आराधना करने लगे हैं। जैसे कि तपस्वियों ने तप का विषय पसंद किया, त्यागी त्याग के विषय, व्याख्यानकार व्याख्यान के और संसारी, संसार के विषयों की आराधना करने में लगे हैं और फिर कहते हैं कि हम पुरुषार्थ करते हैं! ज्ञानी से पूछ तो सही कि यह पुरुषार्थ है या क्या है? अरे! लोग अनिवार्य को ऐच्छिक मान बैठे हैं। अरे! आराधना विषयों की करते हैं और खोजते हैं निर्विषयी (आत्मा) को। अरे! इसका कभी भी अंत नहीं आएगा। अत: जो कुछ किया और उसमें अहंकार किया, तन्मय हुआ, अबव नॉर्मल हुआ तो वे सभी विषय हैं।

आप्तसूत्र- 667

अवस्था में 'अबव नॉर्मल' या 'बिलो नॉर्मल' होना, वह विषय कहलाता है।

लोग विषय के लिए नहीं जी रहे हैं, पर विषय के अहंकार के पोषण के लिए जी रहे हैं।

जिन-जिन विषयों का अहंकार लाए हैं, उनके परमाणु देह में हैं। हमने हमारे महात्माओं के विषय के अहंकार को निकाल दिया है, फिर भी पहले के परमाणु भरे हुए हैं, जो फल देकर चले जाएँगे। जिन विषयों का अहंकार भरा हुआ है, वे विषय सामने आएँगे। जिन-जिन विषयों का अहंकार निर्मूल हो गया है, वे विषय नहीं आएँगे। जब बाह्य अहंकार पूर्णतया निर्मूल हो जाएगा, और परमाणु फल देकर विदा होंगे, तब शरीर चला जाएगा। जब प्रत्येक परमाणु का समभाव से *निकाल* (निपटारा) हो जाएगा, तब इस देह का भी मोक्ष होगा! संसार के रिलेटिव धर्म अबंध को बंध मानते हैं, और जिससे उन्हें बंध होता है उसका उन्हें भान ही नहीं है। यह सूक्ष्म वाक्य है, इसे समझना मुश्किल है। पूरा संसार विषयों के ज्ञान को जानता है। जिस विषय की पढ़ाई की उसी के ज्ञान को जानता है। अरे! जिस विषय की पढ़ाई की उसी का विषयी बना। रिलेटिव धर्म में तो पाँच ही विषय बताए गए हैं लेकिन विषय तो अनंत हैं। एब्नॉर्मल यानी कि अबव नॉर्मल या बिलो नॉर्मल हुआ तो विषयी हो गया। विषयी बना, अर्थात् ऐसा कहा जाएगा कि 'जगत् ज्ञान' में पड़ा। वहाँ 'आत्मज्ञान' नहीं है।

सभी विषयों के वेदन को शांत करने के उपाय हैं, जबकि लोगों में इनका शौक हो गया है। वहाँ पर 'लिमिट'(मर्यादा) में रहना, शौकीन मत बनना। 'नार्मलिटी' खोज निकालो।

'हमारी' एक ही इच्छा है कि जगत् मोक्षमार्ग की तरफ मुड़े, जगत् मोक्षमार्ग को प्राप्त करे! मोक्षमार्ग में मुड़ना किसे कहते हैं? मोक्षमार्ग में एकाध मील तक चले तब। अभी ये जो धर्म हैं, वे वीतराग मार्ग पर नहीं हैं। 'वीतराग मार्ग पर है' ऐसा किसे कहा जाएगा? जो नॉर्मल पर आ जाए उसे। अबव नॉर्मल इज़ द फीवर, बिलो नॉर्मल इज़ द फीवर। सतानवे डिग्री इज़ द बिलो नॉर्मल फीवर एन्ड निन्यानवे डिग्री इज़ द अबव नॉर्मल फीवर अठानवे डिग्री इज़ नॉर्मेलिटी! यह बात तो सिर्फ डॉक्टर ही लेकर बैठे हैं, लेकिन यह तो सभी के लिए है! सोने में, खाने में, पीने में, सभी में नॉर्मेलिटी चाहिए, यही वीतराग मार्ग है। अभी तो सब तरफ अबव नॉर्मल हवा चल पड़ी है इसलिए हर तरफ पोइज़न फैल गया है। इसमें किसी का दोष नहीं है, सभी कालचक्र में फँस गए हैं! वीतराग मार्ग अर्थात् सभी चीज़ों में नॉर्मेलिटी में आओ।

आप्तसूत्र- 2292

विषय तो नवुली परवशता है!

यह मकड़ी जाला बुनती है, फिर खुद ही उसमें फँस जाती है। उसी तरह यह संसार का जाल भी खुद ने ही खड़ा किया है। पिछले जन्म में खुद ने माँग की थी। बुद्धि के आशय में टेंडर भरा था कि एक स्त्री तो चाहिए ही। दो-तीन कमरे होंगे, एकाध बेटा और एकाध बेटी और नौकरी, इतना ही चाहिए। उसके बदले में वाइफ तो दी सो दी, लेकिन सास-ससुर, साला-साली, मौसेरी सास, चचेरी सास, फूफी सास, ममेरी सास... अरे फँसाव, फँसाव! इतना सारा फँसाव साथ में आएगा, यदि ऐसा पता होता तो ऐसी माँग ही नहीं करते! टेंडर तो भरा था सिर्फ वाइफ का, तो फिर यह सब क्यों दिया? तब कुदरत कहती है, 'भाई, वह अकेला तो नहीं दे सकते, ममेरी सास, फूफी सास वह सब देना पड़ता है। आपको उसके बिना अच्छा नहीं लगेगा। यह तो जब पूरा लंगर होगा, तभी असली मज़ा आएगा!' एक इतना सा लेने जाएँ, उसके साथ तो कितने बंधन, कितनी सारी परवशताएँ! वह परवशता फिर सहन नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : ये मन, वचन, काया के लफड़े ही अच्छे नहीं लगते न अब तो!

दादाश्री : इसमें तो छः भागीदार है। शादी की तो उसमें और छः की भागीदारी, मतलब बारह भागीदारों का कोर्पेरेशन खड़ा हो गया ऊपर से। छः के बीच तो कितने लड़ाई-झगड़े चल ही रहे थे, वहाँ फिर बारह की लड़ाई खड़ी हो जाती है! फिर हर एक संतान के साथ छः नये भागीदार जुड़ते जाते हैं। यानी कितना फँसाव खड़ा हो जाता है!

ब्रह्मचर्य तो बहुत उत्तम चीज़ है लेकिन यदि वह उदय में आ जाए तो उसके जैसा और कोई पद है ही नहीं! ये 'फाइलें' तो परवशता लाती हैं। क्योंकि दोनों के द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव अलग ही होते हैं न?

प्रश्नकर्ता : मेरा विचार ब्रह्मचर्य लेने का है और उसका ऐसा विचार नहीं है, इसलिए वह ऐसी बिगड़ी है न!

दादाश्री : वही परवशता है न! कितनी अधिक परवशता!

प्रश्नकर्ता : और उसे तो बल्कि आश्चर्य होता है कि 'आपको मेरे प्रति आकर्षण क्यों नहीं होता?'

दादाश्री : उससे ऐसा कहना कि तू जब संडास में जाती है, फिर भी बाहर रहकर मुझे दिखाई देता है, इसलिए आकर्षण नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : तब तो वह भड़क जाएगी।

दादाश्री : नहीं, लेकिन उसे समझ में आ जाएगा कि संडास में जाए, ऐसा दिखाई दे तो आकर्षण होगा ही कैसे? वह कैसा खराब दिखेगा? लेकिन यह भी बम फटने जैसा ही हो जाता है न? तब तो यों भी फँसाव हो गया न? लक्कड़ का लड्डू जिसने खाया, वह भी पछताया, नहीं खाया, वह भी पछताया।

विषय में सुख की तुलना में विषय की परवशता के दु:ख अधिक हैं ऐसा जब समझ में आएगा, तब फिर विषय का मोह छूटेगा और तभी स्त्री जाति पर प्रभाव डाल सकेगा और उसके बाद वह प्रभाव निरंतर प्रताप में परिणामित होता रहेगा। वर्ना इस जगत् में बड़े-बड़े महान पुरुषों ने भी स्त्री जाति से मार खाई है। वीतराग ही बात को समझ सके थे! अत: उनके प्रताप से ही स्त्रियाँ दूर रहती थीं! वर्ना स्त्री जाति तो ऐसी है कि देखते ही देखते किसी भी पुरुष को लट्टू बना दे, उनमें ऐसी शक्ति है। उसे ही स्त्री चरित्र कहा है न! स्त्री से तो दूर ही रहना चाहिए। उसे किसी प्रकार से लपेट में मत लेना, वर्ना आप ही उसकी लपेट में आ जाओगे। और यही का यही झंझट कितने जन्मों से हुआ है न!

मोक्ष की इच्छा तो बहुत है, लेकिन मोक्ष का रास्ता नहीं मिल पाता इसीलिए अनंत जन्मों से भटकते ही रहे हैं और बिना अवलंबन के जी नहीं पाते इसीलिए उसे स्त्री वगैरह, सभी कुछ चाहिए। शादी करता है, वह भी इसलिए कि आधार ढूँढता है इसीलिए शादी करता है न! इंसान निराधार रह ही नहीं सकता न! निरालंब नहीं रह सकता न! ज्ञानी पुरुष के अलावा अन्य कोई निरालंब रह ही नहीं सकता, कुछ न कुछ अवलंबन ढूँढता ही है!

आप्तसूत्र- 3612

विषय में चंचलता, वही अनंत अवतार के दु:ख का मूल है।

अपने यहाँ कोई चाय पीए, खाए, सबकुछ करे फिर भी बाहर धर्मध्यान रहता है और अंदर शुक्लध्यान रहता है। किसी को ही, निकाचित कर्म वाला हो, उसी का मन विकारी हो जाता है, तब वह फिसल गया कहलाता है। निकाचित कर्म वाला कोई हो सकता है, इसमें। उसे विकारी विचार आते हैं। वह चंचलता वाला होता है। चंचल हो चुका होता है। चंचल को आप पहचानते हो या नहीं पहचानते? इधर देखता है, उधर देखता है। उसे कहें कि 'भाई, क्यों ऐसे हो रहे हो।' तो वह इसलिए कि विकारी विचार आया इसलिए चंचल हो गया और इस कारण से धर्मध्यान और शुक्लध्यान दोनों चले जाते हैं।

ऐसे निकाचित कर्म वाले को हमसे पूछना चाहिए कि 'हमें क्या करना चाहिए? अब कौन सी दवाई लगाएँ?' बहुत गहरे घाव हो जाते हैं। ऐसे कर्म वाले हों तो हमें पूछने में हर्ज नहीं है। वह अकेले में पूछे तो हम दवाई बता देंगे कि यों दवाई लगाना ताकि घाव भर जाएँ।

प्रश्नकर्ता : मन बिगड़ जाए, तब खुद को पता चलता है न?

दादाश्री : मन बिगड़े, विचार बिगड़े तो तुझे पता चल जाता है। लेकिन देह चंचल हो जाए तो वह पता नहीं चलता। देह चंचल हो जाती है। उसके सामने देखने की शक्ति होनी चाहिए। संडास में उसका रूप देख लेना चाहिए।

सख्त ही रहना चाहिए। यह तो अच्छा लगता है। बिल्कुल सख्त, अग्नि समझकर अलग रहना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा कभी-कभार उल्टी साइड का कॉन्फिडेन्स बढ़ जाता है।

दादाश्री : उसमें चोर नीयत होती है। सख्त नहीं हुआ तो समझना कि यहाँ कमी है अभी। जिससे खुद को नुकसान होता है, उससे यदि दूर नहीं रहे न तो मूर्ख ही कहलाएगा न! और यह तो अधोगति कहलाती है। इस गलती को नहीं चला सकते। विषय-विकार और मृत्यु दोनों एक समान ही हैं।

ज़रा सी भी चंचलता उत्पन्न नहीं होनी चाहिए। विषय में चंचलता, वही अनंत जन्मों के दुःख की जड़ है। दिनोंदिन दुःख ही उत्पन्न होते रहते हैं, वर्ना आत्मा प्राप्त होने के बाद दुःख कैसे उत्पन्न हो सकता है? यह तो भयंकर दोष कहलाता है। वर्ना इससे तो दुःख हो तो भी चला जाए और सुख आए। सभी अच्छी चीज़ें आ मिलें। आत्मा प्राप्त हुआ, तब सारी सुविधाएँ सरलता सेप्राप्त होती रहें, पद्धति अनुसार होती रहें। यों ही गप्प नहीं चलेगी न! यह तो वीतरागों का विज्ञान है!

आप्तसूत्र- 670

'यह स्त्री है' ऐसा जो देखता है, वह पुरुष का रोग है और 'यह पुरुष है' ऐसा जो देखती है, वह स्त्री का रोग है। निरोगी होने से मोक्ष है।

इस जगत् में स्त्री को पुरुष का और पुरुष को स्त्री का आकर्षण कुछ उम्र तक रहता ही है। देखने से ही कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं। लोग कहते हैं, 'देखने से क्या होता है?' अरे! देखने से तो निरे कॉज़ेज़ ही उत्पन्न होते हैं। लेकिन यदि 'दृष्टि' दी हुई हो तो देखने से कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होंगे। पूरा जगत् व्यू पोइन्ट से देखता है। जबकि सिर्फ ज्ञानी ही 'फुल' (पूर्ण) दृष्टि से देखते हैं।

लोग क्या कहते हैं कि, 'मुझे स्त्री के लिए बुरे विचार आते हैं।' अरे! तू जब देखता है, तभी फिल्म तैयार हो जाती है। वह फिर रूपक में आती है, तब फिर उसके लिए शोर मचाता है कि ऐसा क्यों होता है? ये फिल्म कॉज़ेज़ हैं और रूपक इफेक्ट है। हमारे अंदर कॉज़ेज़ ही नहीं डलते। जिन्हें कॉज़ेज़ डलते ही नहीं, उन्हें 'देहधारी परमात्मा' ही कहा जाता है। स्त्री तो, आत्मा पर एक तरह का इफेक्ट है। स्त्री भी इफेक्ट है, पुरुष भी इफेक्ट है। उसका इफेक्ट अपने पर नहीं पड़े तो ठीक है। अब स्त्री को आत्मा रूप देखो, *पुद्गल* में क्या देखना है? ये आम सुंदर भी होते हैं और सड़ भी जाते हैं, इनमें क्या देखना? जो सड़े नहीं, बिगड़े नहीं, वह आत्मा है। उसे देखना है। हमें तो स्त्री भाव, पुरुष भाव ही नहीं है। हम उस बाज़ार में जाते ही नहीं।

'यह स्त्री है' ऐसा जो देखते हैं वह जब पुरुष के अंदर रोग होगा तभी उसे स्त्री दिखेगी, वर्ना आत्मा ही दिखेगा और जब स्त्री ऐसा देखती है, कि 'यह पुरुष है' तो वह उस स्त्री का रोग है। निरोगी बनेगा तो मोक्ष होगा। इस समय हमारी निरोगी अवस्था है। इसलिए मुझे ऐसा विचार ही नहीं आता। पैकिंग अलग हैं, सिर्फ ऐसा रहता है, वह स्वाभाविक है। लेकिन ऐसा लक्ष (जागृति) रहे कि यह स्त्री है और यह पुरुष है, ऐसा सब झंझट नहीं है। वह तो यदि अंदर रोग होगा, तभी तक ऐसा दिखाता हैं। जब तक यह रोग है, तब तक हमें परहेज में क्या करना चाहिए? कि उपयोग जागृत रखना चाहिए। ऐसा दिखे कि तुरंत ही शुद्धात्मा देख लो। ऐसी भूल हुई, उसे 'देखतभूली' कहते हैं। पुरुष को पुरुष का रोग नहीं होगा, तो

'यह स्त्री है' ऐसा नहीं दिखेगा और स्त्री को स्त्री का रोग नहीं होगा, तो 'यह पुरुष है' ऐसा नहीं दिखेगा। सभी में आत्मा दिखेगा।

प्रश्नकर्ता : इतनी जागृति नहीं रह पाती न?

दादाश्री : जागृति नहीं रहेगी, तो मार ही खानी पड़ेगी। यह ब्रह्मचर्य तो जिसे बहुत जागृति रहे, उसी के काम का है।

क्रमिक मार्ग में तो स्त्री को पास में रखते ही नहीं, क्योंकि वह बहुत बड़ा जोखिम है। स्त्री, वह पुरुष के लिए जोखिम है। पुरुष, वह स्त्री के लिए जोखिम है। लेकिन मेरा कहना है कि इसमें स्त्री का दोष नहीं है, स्त्री तो आत्मा है, दोष तेरे स्वभाव का है।

आप्तसूत्र- 3626

जहाँ आकर्षण हुआ, आकर्षण में तन्मयाकार हुआ, वहाँ चिपका। आकर्षण हुआ उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन जो तन्मयाकार नहीं हुआ, वह जीत गया।

तुम्हें आकर्षित नहीं होना हो, फिर भी आँखें आकृष्ट हो जाती है। तुम यों आँखें दबाते रहो, फिर भी उस तरफ चली जाती हैं!

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्यों होता है? पूर्व जन्म के परमाणु हैं इसलिए?

दादाश्री : नहीं, पहले भूल की है, पहले तन्मयाकार होने दिया है, उसी का यह फल आया है तो अब उस आकर्षण में वापस तन्मयाकार नहीं होकर उसका प्रतिक्रमण करके वह भूल निकाल देनी है। अगर फिर से तन्मयाकार हो जाए तो फिर नये सिरे से भूल हुई, तो उसका फल अगले जन्म में आएगा। अत: तन्मयाकार नहीं हो, ऐसा यह विज्ञान है अपना! सामने वाले में शुद्धात्मा ही देखते रहना व और कुछ दिखे और आकर्षण हो जाए तो प्रतिक्रमण करना, अन्यथा भय-सिग्नल ही है। बाकी सब का तुम्हें समभाव से *निकाल* करना। इसमें तो सामने वाला ज़बरदस्त बड़ी फरियाद करने वाला है, इसलिए सावधान रहना। हम चेतावनी देते हैं।

प्रश्नकर्ता : यही गड़बड़ हो जाती है न!

दादाश्री : जहाँ आकर्षण हो जाए, उस आकर्षण में यदि तन्मयाकार हो गया तो वह चिपक गया। आकर्षण हो जाए लेकिन आकर्षण में तन्मयाकार नहीं हो तो नहीं चिपकेगा। फिर अगर आकर्षण हो जाए तो उसमें हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : खुद को यह चीज़ कैसे समझ में आएगी कि खुद इसमें तन्मयाकार हो गया है?

दादाश्री : उसमें 'अपना' विरोध होना चाहिए, 'अपना' विरोध, वही तन्मयाकार नहीं होने की वृत्ति है। 'हमें' विषय के संग में चिपकना नहीं है, इसलिए 'अपना' विरोध तो रहता ही है न? विरोध है, वही अलग रहना कहलाता है और गलती से चिपक जाए, गच्चा खाकर चिपक जाए, तो फिर उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : निश्चय से तो खुद का विरोध है ही, फिर भी ऐसा होता है कि उदय ऐसे आ जाते हैं कि उसमें तन्मयाकार हो जाते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : विरोध है तो तन्मयाकार नहीं हो सकते और तन्मयाकार हुए तो 'गच्चा खा गए' ऐसा कहलाएगा। तो ऐसे गच्चा खाया, उसके लिए प्रतिक्रमण तो है ही लेकिन गच्चा खाने की आदत मत डाल लेना, गच्चा खाने के 'हेबीच्युएटेड' मत हो जाना। क्या कोई जान-बूझकर फिसलता है?

यहाँ चिकनी मिट्टी हो, कीचड़ हो, वहाँ लोगों को जान-बूझकर फिसलने की आदत होती है या नहीं? लोग क्यों फिसल जाते होंगे?

प्रश्नकर्ता : वह मिट्टी का स्वभाव है और खुद मिट्टी पर चला, इसलिए।

दादाश्री : मिट्टी के स्वभाव को तो वह खुद जानता है इसलिए फिर पैर की उंगलियाँ जमाकर चलता है, और भी सभी प्रयत्न करता है। हर तरह के प्रयत्न करने के बावजूद भी अगर गिर जाए, फिसल जाए, तो उसके लिए भगवान उसे अनुमति देते हैं। लेकिन फिर वह ऐसी आदत ही डाल दे, तो क्या होगा?!

प्रश्नकर्ता : आदत नहीं पड़नी चाहिए।

दादाश्री : फिसलना तो अपने हाथ में, क़ाबू में नहीं रहा, इसलिए सब से अच्छा तो 'अपना' विरोध, ज़बरदस्त विरोध! फिर जो कुछ हुआ, उसके ज़िम्मेदार 'हम' नहीं हैं। तू चोरी करने के बिल्कुल विरोध में हो, फिर भी अगर तुझ से चोरी हो जाए तो तू गुनाहगार नहीं है क्योंकि तू उसका विरोधी है।

प्रश्नकर्ता : हम विरोध में हैं ही, फिर भी यह जो चूक जाते हैं, वह क्या चीज़ है?

दादाश्री : बाद में चूक जाते हैं, उसका सवाल नहीं है। उसे चूक जाने में भगवान के यहाँ कोई हर्ज नहीं है। जितना चूक गए हैं, भगवान तो उसे याद नहीं रखते क्योंकि चूक जाने का फल तो उसे तुरंत ही मिल जाता है। उसे दुःख तो होता ही है न? वर्ना अगर वह शौक की खातिर करता, तो उसे आनंद होता।

प्रश्नकर्ता : विषय में सहमति नहीं होती फिर भी आकर्षित हो जाता है।

दादाश्री : वह आकर्षित तो हो सकता है। ऐसे आकर्षित हो जाए तो उसे भी जानना चाहिए। लेकिन स्ट्रोंग निश्चय कभी भी किया ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : कभी भी न चूकें ऐसा चाहिए।

दादाश्री : अपना तो निश्चय होना चाहिए कि हमारा यह ऐसा निश्चय है। फिर अगर कुदरत करे, तो वह अपने हाथ का खेल नहीं है। वह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है, उसमें किसी का नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ तो यह हुआ कि ऐसे संयोग मुझे मिलने ही नहीं चाहिए लेकिन यह कैसे होगा?

दादाश्री : ऐसा होगा ही नहीं न! जब तक जगत् है, संसार है, तब तक ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा कब होगा? कि जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते जाओगे, वैसे ही ऐसे संयोग कम होते जाएँगे, वैसे-वैसे उस जगह पर भूमिका अपने आप ही आएगी। ज्ञानी की भूमिका सेफ साइड वाली होती है! उनके सभी संयोग सुगम होते हैं।

आप्तसूत्र- 678

जहाँ आकर्षण वहाँ मोह। आकर्षण वाली जगह पर 'शुद्ध उपयोग' रखो। इससे उस जगह पर आप परेशान नहीं होंगे।

जहाँ आकर्षण, वहाँ मोह। जहाँ हमारी आँखे खिंचें, जहाँ पर अंदर बहुत ही आकर्षण होता रहे, वहाँ मोह होता ही है। अतः शास्त्रकारों ने बहुत सावधान किया है कि आकर्षण वाली जगह पर उपयोग रखना, शुद्ध उपयोग रखना तो वह आपको परेशान नहीं करेगी। वर्ना वह तो आकर्षण वाली जगह है। यदि फिसलन वाली जगह हो तब हम क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : वहाँ सावधान रहकर चलते हैं।

दादाश्री : वहाँ आप जागृति नहीं रखते? और लोग आवाज़ें भी देते हैं, 'अरे! चंदूभाई फिसल जाओगे, ज़रा संभलकर चलना।' उसी प्रकार यह भी बड़ा फिसलन वाला आकर्षण है। अत: यहाँ पर बहुत ही जागृति चाहिए। यहाँ शुद्ध उपयोग रखना। जहाँ आकर्षण होता हो, वहाँ शुद्धात्मा देखकर, प्रतिक्रमण विधि आदि करके सब साफ कर देना। कहीं सभी जगह आकर्षण नहीं होता।

आकर्षण व विकर्षण इस शरीर को होता हो तो आपको चंदूभाई से कहना पड़ेगा कि, 'हे चंदूभाई, यहाँ आकर्षण हो रहा है तो प्रतिक्रमण करो।' तो आकर्षण बंद हो जाएगा। आकर्षण व विकर्षण, ये दोनों ही हमें भटकाते हैं। यह *पुद्गल* क्या कहता है कि, 'आप शुद्धात्मा हो गए, उसमें मुझे हर्ज नहीं है, लेकिन आपका मोक्ष कब होगा? हम तो शुद्ध परमाणुओं के रूप में थे लेकिन आपने ही हमें बिगाड़ा है इसलिए हमें शुद्ध बना दो। जैसे थे वैसे बना दो, तो आप छूट जाओगे। जब तक हमें शुद्ध नहीं करोगे, तब तक आप छूट नहीं पाओगे।' जब तक इस *पुद्गल* का *निकाल* नहीं होगा, तब तक वह छोड़ेगा नहीं। इसीलिए हमने इन सारी फाइलों का समभाव से *निकाल* करने को कहा है, वे परमाणु शुद्ध हो जाएँ, इसलिए कहा है।

पुद्गल की, खुद की ऐसी अलग-अलग शक्तियाँ हैं कि जो आत्मा को आकर्षित करती हैं। उन शक्तियों से ही खुद ने मार खाई है न! आत्मा, *पुद्गल* की शक्ति जानने निकला कि यह क्या है? यह कौन सी शक्ति है? अब उसमें वह खुद ही फँस गया, अब कैसे छूटे? यदि खुद के स्वरूप का भान होगा तो छूटेगा!

आप्तसूत्र- 2299

निज 'स्वरूप' के अलावा जो कुछ भी स्मृति में रहेगा, वह सब विषय ही है।

जो बार-बार याद आता रहे, वह विषय है। पकौड़े या दहीबड़े खाने में हर्ज नहीं है, लेकिन यदि आपने उसे बार-बार याद किया कि 'कभी फिर ऐसे बनाना,' ऐसा कहा तो वह विषय है। सिनेमा देखा और उसमें से कुछ भी याद नहीं आया, तो वह विषय नहीं कहलाता। फिर से याद नहीं आए मतलब उसका *निकाल* हो गया और फिर से याद आया, उसका मतलब तन्मय हो गया, इसलिए वह विषय है। विषय के कितने प्रकार? अनंत प्रकार। गुलाब का फूल पसंद हो, तो बगीचे में देखा कि दौड़भाग करता है, वह विषय। जिसे जो याद आए वह विषय। हीरे याद आते रहें, तो वह विषय और लाने के बाद याद आने बंद हो जाएँ, तो समभाव से *निकाल* हो जाएगा। लेकिन यदि फिर से कभी भी याद आए, तो *निकाल* नहीं हुआ, वह विषय ही कहलाएगा।

इच्छा होना स्वभाविक है लेकिन इच्छा करते रहना अवरोधक है, नुकसानदेह है।

स्त्रियाँ साड़ी देखती हैं और उसे बार-बार याद करती रहती हैं, वह उनका विषय कहलाता है। जहाँ विषय संबंध, वहाँ तकरार होती है।

आप्तसूत्र- 1671

यह दृष्टि दोष का ही परिणाम है। जब यह दृष्टि दोष जाएगा तभी जगत् 'जैसा है वैसा' दिखेगा। जिनका दृष्टि दोष जा चुका है, ऐसे 'अनुभवी पुरुष' के साथ बैठने से अपना दृष्टि दोष चला जाता है। अन्य किसी चीज़ से नहीं।

स्त्री की तरफ तो सब से पहले दृष्टि बिगड़ती

है। दृष्टि बिगड़ने के बाद आगे बढ़ता है। जिसकी दृष्टि नहीं बिगड़ती उसे कुछ भी नहीं होता। अब अगर तुझे सेफ साइड करनी हो तो दृष्टि मत बिगड़ने देना और दृष्टि बिगड़ जाए तो प्रतिक्रमण करना।

प्रश्नकर्ता : इस विषय-विकारी दृष्टि के परिणाम क्या हैं?

दादाश्री : अधोगति। यह तो पूरे दिन 'चाय' याद आती है। 'चाय' देखते ही दृष्टि बिगड़े तो फिर वह चाय पीए बिना रहेगा क्या? दृष्टि का नहीं बिगड़ना, वह सब से बड़ा गुण कहलाता है।

भगवान ने कहा है कि दुनिया में सभी चीज़ें खाना लेकिन मनुष्य जाति की आँखों में मत देखना और उसके चेहरे को एकटक मत देखना। अगर देखो तो सामान्य भाव से देखना, विषय भाव से मत देखना। आम को देखकर पास में रखोगे तो पड़े रहेंगे। वह एक तरफा है, लेकिन यह जीता-जागता जीव तो चिपक जाएगा, उसके बाद एक तरफ रख दोगे तो दावा करेगी। शादी के समारोह में जब स्वागत द्वार पर खड़े रहते हो तो क्या हर एक आने वाले को एकटक देखते हो? नहीं। वहाँ तो एक आता है और एक जाता है, यों सामान्य भाव से देखते हो। उसी तरह से देखना है। मैंने ज्ञान होने से पहले ही तय किया हुआ था कि सामान्य भाव से देखना है।

ये सभी लोग नहीं होते तो अच्छा होता न? अपने भाव ही नहीं बिगड़ते न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो अपने अंदर भाव ही ऐसे हैं, इसीलिए सामने ऐसे निमित्त मिले हैं न? अत: हमें अपने भाव ही तोड़ देने चाहिए, तो फिर निमित्त गले नहीं पड़ेगा न!

दादाश्री : सच कहा है। इसीलिए हम कहते हैं कि भावनिद्रा टालो। ये ऐसे लोग हैं कि सभी तरह के भाव आएँ। उसमें भावनिद्रा नहीं आनी चाहिए, देहनिद्रा आएगी तो चलेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भावनिद्रा ही आती है न!

दादाश्री : ऐसा कैसे चलेगा? यदि ट्रेन सामने से आ रही हो तो भावनिद्रा नहीं रखते। ट्रेन से तो एक ही जन्म की मृत्यु है लेकिन यह तो अनंत जन्मों का जोखिम है। जहाँ चित्र-विचित्र भाव उत्पन्न हों, ऐसा यह जगत् है। उसमें तुझे खुद ही समझ लेना है। भावनिद्रा आती है या नहीं? भावनिद्रा आएगी तो संसार तुझे बाँध लेगा। अब अगर भावनिद्रा आ जाए तो वहीं, उसी दुकान के शुद्धात्मा से ब्रह्मचर्य के लिए शक्तियाँ माँगना कि, 'हे शुद्धात्मा भगवान, मुझे पूरी दुनिया के साथ ब्रह्मचर्य पालन करने की शक्तियाँ दीजिए।' यदि हमसे शक्तियाँ माँगोगे तो उत्तम ही है लेकिन वह तो डायरेक्ट, जिस दुकान से व्यवहार हुआ है, वहीं माँग लेना सब से अच्छा।

श्रीमद् राजचंद्रजी ने कहा है कि, 'देखतभूली टले तो सर्व दु:खों का क्षय होगा।' शास्त्रों में पढ़ते हैं कि स्त्री के प्रति राग मत करना लेकिन स्त्री को देखते ही वापस भूल जाते हैं, उसे 'देखतभूली' कहा है। मैंने तो आपको ऐसा ज्ञान दिया है कि अब आपको 'देखतभूली' भी नहीं रही, आपको शुद्धात्मा दिखाई देंगे। बाहरी पैकिंग चाहे कैसी भी हो, फिर भी पैकिंग के साथ हमें क्या लेना-देना? पैकिंग तो सड़ जाएगा, जल जाएगा, पैकिंग से क्या मिलेगा? इसलिए ज्ञान दिया है कि आप शुद्धात्मा देखो ताकि 'देखतभूली' टले! फिर वह भूल नहीं होने देगी, दृष्टि आकृष्ट नहीं होगी।

हम सब तो सामने वाले व्यक्ति में शुद्धात्मा ही देखते हैं, फिर हममें और कोई भाव कैसे उत्पन्न होगा? बहुत अच्छा सुंदर हो, तो उस पर भी राग हो जाता है लेकिन यदि आप शुद्धात्मा देखो तो राग होगा? इसलिए आप शुद्धात्मा ही देखना।

ज्ञानियों की दृष्टि आरपार होती है। जैसा है वैसा दिखता है। वैसा दिखे तो फिर विषय रहेगा? उसे कहते हैं, ज्ञान। ज्ञान मतलब आरपार, जैसा है वैसा दिखना। यह हाफूस का आम हो तो उस विषय के लिए हम मना नहीं करते। उसे यदि काटे तो खून नहीं दिखेगा, तो उसे आराम से खा। इसे तो काटने से खून निकलता है, लेकिन उसकी जागृति नहीं रहती न! इसलिए मार खाता है, इसलिए यह संसार कायम है। इस ज्ञान से जागृति धीरे धीरे बढ़ती जाती है, विषय खत्म होता जाता है। मुझे बंद करने के लिए कहना नहीं पड़ता। अपने आप ही आपका बंद होता जाता है।

यह चोर नीयत छोड़ देनी चाहिए। उस तरफ दृष्टि ही क्यों जानी चाहिए? ये सभी मीनिंगलेस बातें हैं। यह तो तुझे दृष्टि विकसित करनी चाहिए कि यों कपड़ों सहित भी आरपार दिखे यानी कि कपड़े पहने हों, फिर भी कपड़े रहित दिखाई दे। फिर चमड़ी रहित दिखाई दे, ऐसी दृष्टि विकसित करनी पड़ेगी। तब खुद की सेफ साइड हो सकेगी न! ऐसा क्यों बोल रहा हूँ? मनुष्य को मोह क्यों होता है? अच्छे कपड़े पहने देखे कि मोह हो जाता है! लेकिन हमारे जैसी आरपार दृष्टि हो जाए, फिर मोह ही उत्पन्न नहीं होगा न?

आप्तसूत्र- 3074

जो चित्त को डिगा दें, वे सभी विषय हैं।

जो चित्त को डिगा दें, वे सभी विषय हैं। ज्ञान के अलावा चित्त, जिन-जिन चीज़ों में जाता है वे सभी विषय हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि विचार चाहे कैसे भी आए उसमें हर्ज नहीं है लेकिन चित्त वहाँ जाए तो उसमें हर्ज है।

दादाश्री : हाँ, चित्त की ही झंझट है न चित्त के भटकने से ही झंझट है न! विचार तो चाहे कैसे भी आएँ उसमें कोई हर्ज नहीं लेकिन ज्ञान प्राप्ति के बाद चित्त इधर-उधर नहीं जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अगर कभी ऐसा हो जाए तो उसका क्या?

दादाश्री : अपने यहाँ पर अब ऐसा पुरुषार्थ करना पड़ेगा कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए।' चित्त पहले जितना जाता था उतना ही अभी जाता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उतना तो स्लिप नहीं होता, फिर भी पूछ रहा हूँ।

दादाश्री : नहीं, लेकिन चित्त तो जाना ही नहीं चाहिए। मन में चाहे कैसे भी खराब विचार आएँगे, उसमें हर्ज नहीं है। उन्हें हटाते रहना, उससे यह बातें करना कि 'यदि फलाना मिल जाएगा तब क्या करोगे? उसके लिए गाड़ी-मोटर कहाँ से लाओगे? या फिर सत्संग की बात करना तब फिर मन नए विचार दिखाने लगेगा।

यदि किसी व्यक्ति की, खुद की सुदंर स्त्री है, उसके बावजूद भी रास्ते में किसी स्त्री को देखें तो जैसे उस स्त्री का चित्त साड़ी में रह गया था वैसे ही इस व्यक्ति का चित्त, वह जो स्त्री देखी, उसी में रह जाता है। उसे मूर्च्छित होना कहते हैं। मूर्च्छित होने के बाद क्या शक्ति

रहेगी? मूर्च्छित होने पर वह और शराबी दोनों एक समान ही हो गए। उसमें फिर कोई बरकत नहीं रहेगी।

चित्त सब से ज़्यादा किस में फँसता है? विषय में! और जितना चित्त फँसा, उतना ही ऐश्वर्य टूट गया। ऐश्वर्य टूटा कि जानवर बन गया। अत: विषय ऐसी चीज़ है कि उसी से सारा जानवरपन आया है। मनुष्य में से जानवरपन, विषय के कारण ही आया है। फिर भी हम क्या कहते हैं कि यह तो पहले का भरा हुआ माल है, वह निकलेगा तो सही लेकिन अगर वापस नये सिरे से संग्रह न करो तो वह उत्तम कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : यदि चित्त ज़रा सा भी विषय के स्पदंनों को टच हुआ हो वह स्थूल में नहीं लेकिन अगर सूक्ष्म में भी हुआ हो तो कितने ही समय तक खुद की स्थिरता नहीं रहने देगा। यदि चित्त उसे छूकर, वापस उससे अलग हो जाए तो खुद की स्थिरता नहीं जाएगी।

दादाश्री : पूर्व जन्म में जिन पर्यायों का बहुत वेदन किया हो तो अभी वे ज़्यादा आते हैं। तब चित्त वहीं पर चिपक जाता है। जैसे-जैसे वह चिपचिपाहट धुलती जाएगी, वैसे-वैसे फिर चित्त वहाँ ज़्यादा नहीं चिपकेगा और अलग हो जाएगा। जहाँ *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए) आती है न वहीं पर चिपका रहता है। तब हमें क्या कहना है? तुझे जितने नखरे करने हों उतने कर। अब 'तू ज्ञेय है और मैं ज्ञाता', इतना कहते ही वह मुँह घुमा देगा। वह नाचेगा तो सही लेकिन उसका जितना टाइम होगा उतना ही नाचेगा, फिर चला जाएगा। आत्मा के अलावा इस संसार में अन्य कुछ भी अच्छा नहीं है। यह तो पूर्व में जिनसे परिचय रखा हो, वे पूर्व के परिचय अभी दखल करवाते हैं।

आप्तसूत्र- 3617

वासनाएँ क्या हैं? वे कैसे जाएँगी? 'मैं चंदूभाई हूँ' मिटने पर ही वासनाएँ जाएँगी, वर्ना वासनाएँ नहीं जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य की वासनाओं का मोक्ष कब होगा?

दादाश्री : वासनाओं का तो हो ही जाएगा। वासनाएँ तो आप ने खड़ी की हैं, आप ही उसके जन्मदाता हो और विलय करने वाले भी आप ही हो।

आपकी वासना अलग और इस भाई की वासना अलग। हर एक की अलग-अलग वासनाएँ हैं न! और वासना तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। अभी अगर कोई मांसाहारी व्यक्ति मित्र बन जाए न, तो फिर मांस खाना भी सीख जाएगा। अब यह वासना कहाँ से लाए थे? तब कहते हैं, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स इकट्ठा होते हैं और वह नया नहीं है, यह गप्प नहीं है और फिर पहले के कॉज़ेज़ के हिसाब से हैं, यह सब। इसलिए खाना सीख जाता है। दूसरा, संयोगों की वजह से वासनाएँ खड़ी होती हैं। मान लो, एक लड़का है कि जो ऐसी जगह पर बड़ा होता है कि जहाँ कोई भी इंसान दिखे तक नहीं तो फिर वह विषय को नहीं समझ सकेगा। खाना-पीना समझ सकेगा लेकिन वहाँ पर कोई जानवर भी नहीं होना चाहिए। उसे नज़र नहीं आना चाहिए। तो उसे कोई वासना नहीं होगी। यह तो सब वासनाओं का संग्रहस्थान है और वहीं पर जन्म होता है तो फिर क्या होगा उस संग्रहस्थान में से? वह नज़र आया कि तभी से वासना खड़ी हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : वासना छोड़ने का सब से आसान रास्ता कौन सा?

दादाश्री : मेरे पास आना, वही उपाय है। और कौन सा उपाय? आप खुद वासना छोड़ने जाओगे तो दूसरी घुस जाएगी क्योंकि खाली अवकाश रहता ही नहीं। आप वासना छोड़ते हो तो वहाँ अवकाश हो जाता है और वहाँ फिर दूसरी वासना घुस जाएगी।

अब ये वासनाएँ क्या हैं? 'मैं चंदूभाई हूँ' यह मिटेगा, तभी वासनाएँ जाएँगी, वर्ना वासनाएँ नहीं जाएँगी। मैं तो क्या कहता हूँ कि 'आत्मा क्या है' वह जानो, 'अनात्मा क्या है' वह जानो। इतना जानते ही वासनाएँ गायब हो जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : उसे कैसे मिटा सकते हैं?

दादाश्री : जो वासना वाला है, वह चंदूभाई है और आप तो 'माइ नेम इज़ चंदूभाई' कहते हो। इसलिए आप अलग हो इससे। इस बात पर भरोसा है? तो वह आप कौन हो? इतना ही आपको मैं रियलाइज़ करवा देता हूँ तो आपकी वासना छूट जाएगी।

और यह भी आश्चर्य है कि जब ज्ञान प्राप्त होता है, तब वासनाएँ कहाँ से कहाँ गायब हो जाती है, वही समझ में नहीं आता।

आप्तसूत्र- 3123

जो चित्तवृत्तियाँ बाहर भटक रही थीं, जब से वे खुद के घर लौटने लगीं तभी से समझना कि मुक्ति के बैन्ड बाजे बजने लगे। चित्तवृत्तियों के बंधन से मुक्त हो, उसी को ही कहते हैं संसार से मुक्त होना। सिर्फ चित्तवृत्तियाँ ही बंधी हुई हैं! यह चित्त ढीला हो गया है!

चित्त वृत्तियाँ जितनी भटकेंगी, उतना ही आत्मा को भटकना पड़ेगा। चित्त वृत्ति जिस जगह जाएगी, उसी जगह आपको भी जाना पड़ेगा। चित्त वृत्ति नक्शा बना देती है। अगले जन्म के लिए आने-जाने का नक्शा बना देती है। फिर उस नक्शे के अनुसार हमें घूमना पड़ता है, तो कहाँ-कहाँ घूम आती होंगी चित्तवृत्तियाँ?

प्रश्नकर्ता : लेकिन चित्त भटके तो उसमें हर्ज क्या है?

दादाश्री : चित्त जैसी प्लानिंग (योजना) करेगा, उस अनुसार हमें भटकना पड़ेगा। अत: ज़िम्मेदारी अपनी है, जितना भी भटकता रहेगा उसकी!

चित्त चेतन है, वह जहाँ-जहाँ चिपका, वहाँ-वहाँ भटकते, भटकते और भटकते ही रहना पड़ेगा!

प्रश्नकर्ता : चित्त हर कहीं नहीं चिपक जाता, लेकिन अगर एक जगह चिपक जाए तो क्या वह पहले का हिसाब है?

दादाश्री : हाँ, हिसाब है तभी चिपकता है। लेकिन अब हमें क्या करना चाहिए? पुरुषार्थ वह कि जहाँ हिसाब हो वहाँ पर भी नहीं चिपकने दे। चित्त जाए लेकिन धो दिया तो, तब तक वह अब्रह्मचर्य नहीं माना जाता। अगर चित्त जाए और धोए नहीं तो वह अब्रह्मचर्य कहलाता है। इसीलिए कहा है न, 'इसलिए सावधान रहना मन-बुद्धि, निर्मल रहना चित्तशुद्धि।' मन-बुद्धि को सावधान करते हैं। अब हमें चित्तवृत्ति निर्मल रखने के लिए क्या करना पड़ेगा? आज्ञा में रहना पड़ेगा। हमारा चित्त संपूर्णत: शुद्ध रहता है इसलिए फिर कुछ छूता भी नहीं है और बाधा भी नहीं डालता। आप जैसे-जैसे आज्ञा में रहते जाओगे, वैसे-वैसे पहले का जो छू चुका होगा, जैसे कि चंद्र ग्रहण लिखा होता है कि आठ बजे से एक बजे तक, मतलब आठ बजे शुरू होता है और फिर एक बजे के बाद फिर से चंद्र ग्रहण नहीं होता। उसी तरह

आज्ञा में रहा करो ताकि जो ग्रहण हो गया है, वह छूट जाए और नया जोखिम उड़ जाए तो फिर कोई परेशानी नहीं रहेगी न!

मेरी चित्तवृत्ति मुझ में ही रहती हैं, आपकी बिखर गई हैं। क्या आपकी बिखरी हुई नहीं हैं? बस तात्त्विक दृष्टि से यों इतना ही फर्क है। ज़्यादा फर्क नहीं है। यदि आप अपनी चित्तवृत्तियों को बिखरने नहीं दो, तो धीरे-धीरे, आप मेरे जैसे ही बन जाओगे।

किस-किसमें बिखरने दी? कोई अच्छी घड़ी देखी और उसे खरीदने के लिए आज पैसे नहीं हों, तो मन में ऐसा घुस जाता है कि जब पैसे आएँगे तब यह घड़ी लेनी है। तब फिर वापस वे चित्तवृत्तियाँ उस दुकान में ही रहती हैं। रात को भी वापस नहीं आती। ये जो स्त्रियाँ हैं न, वे जब बाज़ार में जाती है तब बाज़ार में वे व्यापारी साड़ियों को सुखाने के लिए रखते हैं न, गरमी के दिनों में, दो-दो हज़ार की, तीन-तीन हज़ार की साड़ियाँ सुखाने के लिए रखते हैं न? किसलिए रखते हैं साड़ियाँ?

प्रश्नकर्ता : आने-जाने वाले देखें इसलिए।

दादाश्री : कितनी अच्छी साड़ी है, ओहोहो! कितनी अच्छी!! यदि यही साड़ी पेटी में पड़ी हो तो चित्तवृत्तियाँ नहीं जाएगी। यह तो स्त्री और पुरुष दोनों जा रहे हों और साड़ी दिखे तो भौंचक्के रह जाते हैं! अगर हम व्यापारी से पूछें कि, 'भाई तूने यह साड़ी सुखाने के लिए रखी है क्या?' तब वह कहेगा, 'नहीं। लोगों को आकर्षित करके उनसे पैसे लेने के लिए। मुझे तो व्यापार करना है।' 'अरे! लेकिन साड़ी, यह जड़ चीज़ आकर्षित करेगी।' तब कहता है, 'अच्छे-अच्छों को आकर्षित करेगी। पहनने वाली को भी आकर्षित करेगी और पुरुषों को भी आकर्षित करेगी।' इस साड़ी में इतनी शक्ति डाली है! उस साड़ी को देखकर पति से कहती है, 'देखी न, आपने?' तब पति समझ जाता है कि अब तो मेरी आ बनेगी। 'हाँ, देखी देखी। ऐसी तो बहुत होती हैं।' ऐसा कहता है। वह स्त्री को पटाने की कोशिश करता है लेकिन वह नहीं पटती और फिर स्त्री की चित्तवृत्तियाँ चोरी हो गई वहाँ पर और जब वह घर आती है तब यदि हम उनका चेहरा देखें तो, 'निकलते समय जैसा चेहरा था, वैसा नहीं है। बाज़ार में कुछ खो गया है।' तब कहते हैं, 'पूरा चित्त चोरी हो गया है, बेचारी का। अब चित्त सिर्फ साड़ी में ही रहा करेगा।' आपका चित्त इस तरह किस-किस जगह पर खोया है?

मेरा चित्त तो मुझ में ही है, इधर-उधर नहीं जाता। यह मेरा चित्त, मुझ में है और आपका, आपमें नहीं है। यदि आप उसे धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके बदलने लगोगे तो क्या कोई परेशानी है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : ये लोग जो बताते हैं, वे रास्ते मोक्ष के नहीं हैं। वे स्वतंत्र होने के रास्ते भी नहीं हैं और धर्म के रास्ते भी नहीं हैं। रास्ता तो खुद की चित्तवृत्तियों को वापस मोड़ लेना, वही रास्ता है। वे लोग बेकार ही बखेड़ा करते हैं उनमें से एक भी धर्म का सही रास्ता नहीं है। फिर भी वे जो कहते हैं, वह गलत भी नहीं है। कितने ही लोगों को वह माफिक आता है। सभी के स्टैन्डर्ड अलग-अलग हैं हर एक स्टैन्डर्ड वाले को खुराक तो चाहिए न, चाहिए या नहीं?

चित्त सब से ज़्यादा किसमें फँस जाता है? विषय में। जिसमें विषय नहीं है उसका शायद यह सब चला सकते हैं। चित्त के फँसने की सब से बड़ी जगह कौन सी है? वह है

विषय। दूसरी जगह कौन सी? अनावश्यक चीज़ें। पेट में खाने के लिए चाहिए। वह खाना, दाल-चावल या रोटी जो चाहिए वह तो चाहिए ही और क्या चाहिए? इतनी चीज़ें आवश्यक कहलाती हैं। खाना-पीना, कपड़े वे आवश्यक चीज़ें कहलाती हैं और ये अनावश्यक, जिनकी कोई ज़रूरत ही नहीं है।

यदि यह चित्त बिखर जाए तो वह घड़ी के पेन्डुलम की तरह हिलता ही रहता है। हमारा चित्त किसी में भी नहीं है न! इस देह में भी नहीं है न! तब जाकर यह वाणी निकलती है, तब यह होता है।

यह तो, जो देखा उसी में चित्त फँस जाता है। इसमें फँस जाता है, उसमें फँस जाता है। जितनी नयी चीज़ें देखता हैं न। मोमबत्ती देखता है न, नए प्रकार की दिखाई देती है तो फिर चित्त उसमें फँस जाता है। देखो उस तरफ वह कितनी अच्छा प्रकाशस्तंभ है न! तो वापस चित्त उसमें फँस जाता है! चित्त फँसा अर्थात् ऐश्वर्य टूट गया और ऐश्वर्य टूटा तो जानवर बन गया।

आप्तसूत्र- 2844

कषायों का जन्म कहाँ से हुआ? विषय में से। विषय का दोष नहीं है। अज्ञानता का दोष है। 'रूट कॉज़' अज्ञानता है।

प्रश्नकर्ता : विषय और कषाय, इन दोनों मे मूलभूत फर्क क्या है?

दादाश्री : कषाय अगले जन्म का कारण है और विषय पिछले जन्म का परिणाम है। इन दोनों में बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : इसे ज़रा विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : ये जितने भी विषय हैं, वे पिछले जन्म के परिणाम हैं इसलिए हम डाँटते नहीं हैं कि आपको मोक्ष चाहिए तो जाओ, अकेले पड़े रहो। आपको घर से बाहर नहीं हाँक देते लेकिन हमने हमारे ज्ञान से देखा है कि विषय पिछले जन्म का परिणाम है। इसलिए कहा है कि, 'जाओ, घर जाकर सो जाओ, आराम से फाइलों का *निकाल* करो।' हम अगले जन्म का कारण तोड़ देते हैं और जो पिछले जन्म का परिणाम है, उसका छेदन हम से नहीं हो सकता। किसी से भी छेदन नहीं हो सकता। महावीर भगवान से भी छेदन नहीं हो सकेगा क्योंकि भगवान को भी तीस साल तक संसार में रहना पड़ा था और बेटी हुई थी। विषय और कषाय का सही मतलब ऐसा होता है लेकिन इस बारे में लोगों को कुछ पता ही नहीं चलता न! वह तो सिर्फ भगवान महावीर ही जानते थे कि इसका अर्थ क्या होता हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन विषय आए, तभी कषाय उत्पन्न होते हैं न?

दादाश्री : नहीं। सभी विषय, विषय ही हैं, लेकिन जब विषय में अज्ञानता होती है, तब कषाय खड़े होते हैं और ज्ञान हो तो कषाय नहीं होते। कषाय कहाँ से जन्मे? तब कहे, विषय में से। अत: ये जितने भी कषाय खड़े हुए हैं, वे सब विषय में से खड़े हुए हैं लेकिन इसमें विषय का दोष नहीं है, अज्ञानता का दोष है। रूट कॉज़ क्या है? अज्ञानता। क्रमिक मार्ग में पहले विषय बंद करने पड़ते हैं, तभी कषाय बंद होते हैं इसीलिए तो सभी विषयों का त्याग कर-करके ढक्कन लगाना पड़ता है न! वे भी ऐसे पेच वाले ढक्कन कि जो अपने आप खुल न जाएँ। अगर ऐसे ढक्कन नहीं होंगे तो ढक्कन ढीले पड़ जाएँगे। भोजन में सबकुछ एक साथ मिलाकर खाते हैं ताकि जीभ का विषय नहीं चिपके। उसी प्रकार आँख का विषय नहीं चिपके, कान का विषय

नहीं चिपके, नाक का विषय नहीं चिपके, स्पर्श का विषय नहीं चिपके, ऐसे पेच वाले ढक्कन लगाने पड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : ये जो टकराव और कषाय होते हैं, उनकी जड़ विषय ही है न?

दादाश्री : हाँ, सबकुछ विषय के कारण ही है। विषय में वह एक्सपर्ट हो जाता है। विषय में 'टेस्टफुल' हो जाता है इसलिए अंदर स्वार्थ रहता है और स्वार्थ के कारण टकराव होते हैं। जहाँ स्वार्थमय परिणाम होते हैं, वहाँ कभी कुछ भी दिखाई नहीं देता। स्वार्थी हमेशा अंधा होता है। स्वार्थी, लोभी और लालची, सभी अंधे होते हैं। इस दुनिया का पूरा आधार पाँच विषयों पर ही है। जिनमें विषय नहीं है, उनमें टकराव नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : और यह बात सही है या नहीं कि विषय दोष, कषाय से भी बड़े होते हैं?

दादाश्री : नहीं, विषय के दोष हैं लेकिन विषय इफेक्टिव है। कषाय कॉज़ेज़ हैं। यानी इफेक्ट तो उसका सारा इफेक्ट देकर चला जाएगा। अत: कषाय ही दु:खदायी हैं और कषाय से ही संसार खड़ा है लेकिन यह समझने की ज़रूरत है कि वह किस तरह से इफेक्टिव हैं।

प्रश्नकर्ता : यह ज़रा विस्तार से समझाइए कि ये सारे विषय इफेक्ट हैं।

दादाश्री : विषय, वे इफेक्ट ही हैं। हमेशा वे इफेक्ट ही हैं लेकिन जब तक कॉज़ेज़ समझ में नहीं आते, तब तक विषय भी कॉज़ेज़ स्वरूप ही हैं। ऐसा है न, यह बात बाहर ज़ाहिर में नहीं कह सकते कि विषय कॉज़ेज़ नहीं हैं, सिर्फ इफेक्ट ही हैं। जो कॉज़ेज़ को कॉज़ेज़ समझते हैं, उनके लिए विषय इफेक्ट है।

आप्तसूत्र- 3611

यदि भय रखना है तो विषय का रखना है। इस जगत् में और कोई भी जगह भय रखने लायक नहीं है। इसलिए उससे सावधान रहना।

विषय को ज़हर समझा ही नहीं। ज़हर समझे तो उसे छूएगा ही नहीं न! इसलिए भगवान ने कहा है कि ज्ञान का फल है विरति! समझने का फल क्या? कि रुक जाए। विषयों के जोखिम को समझा ही नहीं इसलिए वैसा करने से रुका नहीं।

यदि कोई भय रखने जैसा हो तो वह इस विषय का भय रखने जैसा है। इस जगत् में अन्य कोई भय रखने जैसी जगह है ही नहीं। इसलिए विषय से सावधान हो जाओ। इन साँप, बिच्छू और बाघ से सावधान नहीं रहते? सावधान रहते हैं न? जब बाघ की बात आए, तब हमें उससे भय नहीं रखना हो, फिर भी उससे भय लगता है न? उसी तरह जब विषय की बात आए तो भय लगना चाहिए। जहाँ पर भय लगे, वहाँ पर क्या मज़े से खाना खाते हैं? नहीं। अत: जहाँ पर भय हो, वहाँ मज़ा नहीं होता। जगत् के लोग इस विषय को भयसहित भोगते होंगे? नहीं। लोग तो यह मज़े से भोगते हैं। जहाँ भय हो, वहाँ भोग ही नहीं सकते।

कोई पूछे कि जलेबी खाऊँ? तो मैं कहूँगा कि वह अच्छी है, खाना आराम से। दहीबड़े खाना, सब खाना। इन सभी में स्वाद आता है। ज्ञानी को स्वाद समझ में आता है लेकिन उन्हें इस स्वाद में, अच्छा या बुरा है, ऐसा नहीं होता कि यह होगा तभी चलेगा। विषय का तो ज्ञानी पुरुष को सपने में भी विचार नहीं आता। वह तो पाशवी विद्या है। मनुष्य में खुली पाशवता कहनी

हो तो वह इतनी ही है। मनुष्यपन तो मोक्ष के लिए ही होना चाहिए।

अनंत जन्मों तक कमाई करे, तब जाकर उच्च गोत्र, उच्च कुल में जन्म होता है लेकिन फिर लक्ष्मी और विषय के पीछे अनंत जन्मों की कमाई खो देता है!

आप्तसूत्र- 669

'विषय, वे विष नहीं है, विषयों में निडरता, वह विष है'। अतः विषय से डरो।

विषय को लेकर संसार में भारी नासमझी चल रही है। शास्त्र कहते हैं कि विषय वह विष है। कुछ लोगों का भी कहना है कि विषय विष है, और वह मोक्ष में नहीं जाने देता। सिर्फ हम ही कहते हैं कि 'विषय विष नहीं है, लेकिन विषय में निडरता विष है। इसलिए विषय से डरो।' इन सारे विषयों में निडरता रखना ही विष है। निडर कब रहना चाहिए कि दो-तीन साँप आ रहे हों, उस समय आपके पैर नीचे हों, और यदि आपको डर नहीं लगता हो, तो पैर नीचे रखना और यदि डर लगता हो, तो पैर ऊपर कर लेना लेकिन यदि आपको डर नहीं लगता हो और पैर ऊपर ही नहीं लेते हो, तो वह पूर्ण ज्ञानी, केवलज्ञानी की निशानी है। जब तक पूर्ण नहीं हुए, तब तक आप खुद ही मारे डर के पैर ऊपर कर लेते हो। इसलिए हम आपको विषयों में निडर रहने के लिए एक थर्मामीटर देते हैं। 'यदि साँप के सामने तू निडर रह सकता हो, तो विषय में निडर रहना और वहाँ यदि डर लगता है, पैर ऊपर कर लेता है, तो विषयों से भी डरते रहना।' विषयों में निडर रह ही नहीं सकते। भगवान महावीर भी विषयों से डरा करते थे और हम भी डरते हैं। विषयों में निडरता अर्थात् असावधानी।

विषयों की आराधना करने जैसा नहीं है, और उनसे डरने जैसा भी नहीं है, उनसे चिढ़ने जैसा भी नहीं है। हाँ, साँप के सामने तू कैसे सावधान रहकर चलता है, वैसे विषयों से सावधान रहना, निडर मत होना।

प्रश्नकर्ता : निडरता, वह लापरवाही कहलाती है न?

दादाश्री : मैंने निडरता शब्द इसलिए दिया है ताकि विषय से डरे। सिर्फ लाचार होकर ही विषय में पड़े। इसलिए विषय से डरो, ऐसा कहते हैं क्योंकि भगवान भी डरते थे, बड़े-बड़े ज्ञानी भी डरते थे, तो आप ऐसे कैसे हो कि जो विषय से नहीं डरते? मुझे अब कुछ बाधक नहीं है, वही विष है। अतः विषय से डरो। विषय भोगो ज़रूर लेकिन विषय से डरो। जैसे सुंदर भोजन मिला हो, रस-रोटी वगैरह, वह सब भोगो अवश्य, लेकिन डरते हुए भोगो। डरते हुए किसलिए कि ज़्यादा खाओगे तो तकलीफ हो जाएगी इसलिए डरो।

एक साधु खोज लाओ कि जिसकी आज हम शादी करवाएँ और यदि एक महीना भी घर चला ले, तो वह सच्चा! अरे! यह तो तीसरे दिन ही भाग जाएगा। 'फलाना ले आओ, वह फलाना ले आओ, कहा कि भाग जाएगा। और ये (साधु) लोगों को परेशान करते हैं कि, 'अब आपका क्या होगा?' इसलिए मुझे ये भारी शब्द लिखने पड़े कि 'विषय विष नहीं हैं, जाओ घबराना मत', और कहा, 'मैं आपकी घबराहट निकालने आया हूँ। सहज भाव से विषय भोगो न! सहज होना चाहिए। यदि सहज भाव से विषय भोगे तो विषय, विषय को ही भोगते हैं। यह तो, सहज भाव से भोगना आता नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : यानी विषय में जो पड़ता हैं, उसमें उसकी कोई हिंमत काम नहीं करती, वह तो उसकी आसक्ति ही करवाती है।

दादाश्री : नहीं, हमें उसमें भी हर्ज नहीं है। निडरता में हर्ज है। यानी 'अब मुझे कुछ भी बाधक नहीं है, मैं भले ही कैसे भी विषय भोगूँ, फिर भी मुझे कुछ नहीं होगा।' ऐसी लापरवाही रहे तो, उस लापरवाही को हम निडरता कहते हैं। लोगों ने विषयों को एकांतिक रूप से 'विष' कहा है, इसलिए संसारी 'डिस्करेज' हो गए। तो फिर इन संसारियों को विष ही पीते रहना है न? क्या सिर्फ इन त्यागियों को ही विष नहीं पीना है? सिर्फ यह स्त्री-विषय ही विषय नहीं है। त्यागियों के भी सभी विषय होते हैं और संसारियों के भी सभी विषय होते हैं, लेकिन शास्त्रों में सिर्फ स्त्री-विषय को ही ऐसा ज़हर समान कहा गया है। इससे उन्होंने लोगों को डरा दिया है कि 'हम तो संसारी लोग हैं। विषय विष समान हैं, फिर भी करने तो पड़ते ही हैं न,' इसलिए फिर (मोक्ष में कैसे जा पाएँगे) वह उन्हें खटकता रहता है। यह गुत्थी निकाल देने योग्य है और यह जो खटकता रहता है, वह दुःख कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : विषयों में निडरता, यदि वह विष है तो फिर जो निडरता उत्पन्न होती है, वह किसे आती है?

दादाश्री : खुद निडरता रखे तो रहेगी। यदि वह अहंकार करने लगे कि, 'मैं विषय से जीत गया, अब कोई हर्ज नहीं है।' वह निडरता कहलाती है। वह अहंकार कहलाता है। यदि निडर रहा तो वह विष हो गया। इस विषय में तो आखिर तक निडर नहीं होना है। पुलिस के पकड़े बिना तो कोई जेल में नहीं जाता न? पुलिस पकड़कर जेल में ले जाए, तभी जाओगे न? पुलिस द्वारा ले जाए बिना कोई जेल में जाए, तो नहीं समझ जाएँगे कि वह निडर हो गया है? अगर पुलिस वाला पकड़कर जेल में ले जाए तब उसका गुनाह नहीं है। इसी तरह यदि संयोग उसे विषय के गड्ढे में गिराएँ तो उसमें हर्ज नहीं है। यदि अब्रह्मचर्य की गाँठ विलय हो जाए तब तो सबकुछ चला जाएगा। यह सारा संसार उसी पर खड़ा हुआ है। रूट कॉज़ यही है। इन लोगों के दुःख दूर करने के लिए, लोगों के मन पर से बोझ हट जाए इसीलिए ज्ञानी पुरुष ऐसा कहते हैं कि विषय, वह विष नहीं हैं। ताकि आपको ऐसा लगे कि चलो, इतनी तो शांति हुई।

विषयों में निडरता, वह विष है। निडरता यानी क्या कि कुछ लोग कहते हैं कि, 'दादा ने मुझे ज्ञान दिया है, तो अब मुझे कोई विषय बाधक नहीं है। मुझे तो भोगने में कोई हर्ज ही नहीं है न?' तो खत्म हो गया। इसलिए बात को समझो।

प्रश्नकर्ता : यदि निडरता आ जाए तो फिर स्वच्छंदता आ जाती है न?

दादाश्री : स्वच्छंदता आए, उसी क्षण मार खिला देती है इसीलिए हम यह बताते नहीं हैं। वर्ना इन जवान लड़कों में उल्टा हो जाएगा। यह तो आप जैसे जो कि किनारे पर आ गए हैं, उनसे यह बात करते हैं। ये जवान लोग तो वापस कुछ उल्टा पकाएँगे! लेकिन वे यदि 'यथार्थ ज्ञान' समझें और उस ज्ञान में रहें तो कुछ स्पर्श नहीं कर सकेगा, लेकिन यह ज्ञान उतना नहीं रह पाता न! इन्सान की इतनी शक्ति नहीं है न अनुभव हुए बिना काम का नहीं है। जब तक अनुभव नहीं होता, तब तक आज्ञा में रहना।

यह तो किसी के मन में ऐसी शंका होती हो कि, 'संसार में रहते हैं और विषय तो हैं, तो यह कैसे संभव है?' आपको शंका नहीं रहे इसलिए हम यह बात कर रहे हैं। वर्ना लोग तो दुरुपयोग करेंगे। आज कल के लोगों को तो यह पसंद ही है इसलिए दुरुपयोग कर लेंगे क्योंकि विपरीत बुद्धि अंदर तैयार ही रहती है। फिर भी

यह जो ज्ञान दिया है, वह और ही तरह का विज्ञान है! हर तरह से रक्षण करे ऐसा है लेकिन यदि कोई जान-बूझकर बिगड़ना चाहे तो बिगड़ जाएगा, सब खत्म कर डालेगा! इसलिए हमने कहा है कि हमारी इन आज्ञाओं में रहना। हम आपको इतनी ऊँचाई पर ले गए हैं कि यहाँ से, ऊपर से यदि आप लुढ़के तो फिर हड्डियाँ भी नहीं मिल पाएँगी। इसलिए सीधे चलना और ज़रा सा भी स्वच्छंद मत करना। स्वच्छंद तो इसमें चलेगा ही नहीं!

'मुझे दादा का ज्ञान मिला है, अब मुझे कोई रुकावट नहीं है।' वह तो भयंकर रोग है। तब तो यह विष समान हो जाएगा। बाकी, विषय, विष नहीं है, विषयों में निडरता वही विष है। यह ज्ञान दुरुपयोग करने जैसा नहीं है!

आप्तसूत्र- 681

रोटी और सब्ज़ी भूख मिटाने के लिए खाना है। टेस्ट(स्वाद) के लिए नहीं। टेस्ट के लिए खाने जाओगे तो रोटी और सब्ज़ी भाएँगे नहीं। अतः वे वेद हो जाएगा। तीन वेदों से यह पूरा जगत् सड़ रहा है।

भूख का शमन करने के लिए खाना है। भूख लगे उसका शमन करो। जहाँ *पूरण* करना पड़े, वह सब भूख कहलाती है। भूख, वह वेदना शमन करने का उपाय है। इस तरह सभी विषय वेदना का शमन करने के उपाय हैं। जबकि लोगों को विषय का शौक़ हो गया है। अरे! शौक़ीन मत हो जाना। वहाँ लिमिट खोज निकालना और नोर्मेलिटी में रहना।

प्रश्नकर्ता : वेद के तौर पर नहीं लेना है, उस पर से आप क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : लोग वेदते हैं यानी टेस्ट चखते हैं। टेस्ट के लिए चखना, टेस्ट के लिए खाना, वह भूख नहीं कहलाती। भूख मिटाने के लिए रोटी और सब्ज़ी खानी है, टेस्ट के लिए नहीं। टेस्ट के लिए खाने जाओगे तो रोटी और सब्ज़ी आपको भाएगा ही नहीं। टेस्ट लेने गया इसलिए वेद हो गया है। 'भूख' के लिए ही 'खाए', इतना तू समझदार हो जा। तो फिर मुझे तुझसे कुछ कहना ही नहीं पड़ेगा न! तीन वेदों से यह सारा जगत् सड़ रहा है, गिर रहा है।

आप्तसूत्र- 683

इस जगत् में जीतने लायक क्या है? ये तीन वेद ही हैं। जिसने वेद जीत लिए, उसने पूरा जगत् जीत लिया। तीन वेद कौन-से हैं? स्त्री वेद, पुरुष वेद और नपुंसक वेद।

प्रश्नकर्ता : इन तीन वेदों का सॉल्यूशन तो पूरा जगत् खोज रहा है और जैसे-जैसे सॉल्यूशन करने जाता है, वैसे-वैसे और अधिक उलझता है।

दादाश्री : हाँ, यानी सॉल्यूशन के सभी रास्ते उलझन बढ़ाते हैं। आसपास वालों से पूछें कि, 'ये भाई कैसे हैं?' तब सभी कहते हैं कि, 'बहुत सुखी हैं।' और उनसे पूछें तो कहेगा, 'बहुत दुःखी हूँ।' यह सब वेद के कारण है। पूरा दिन जलन, जलन... यह सारी जलन वेद के कारण है। वर्ना मनुष्य में जलन नहीं होती। जिसने वेद जीता उसका काम हो गया। इस जगत् में जीतने जैसा क्या है? तब यह, कि वेद। क्या वेद को तू समझ गया है? वे तीन वेद कौन-से हैं? पुरुष वेद, स्त्री वेद और नपुंसक वेद।

दुःख के कारण ही लोग विषय भोगते हैं लेकिन यदि सोचें, तो विषय निकल सकता है। यदि इस देह पर से चमड़ी निकाल दी जाए, तो

राग होगा क्या? चमड़ी की यह चद्दर ही ढँकी हुई है न? और पेट तो मलपेटी है, चीरने पर मल ही निकलेगा। हाथ पर से चमड़ी निकल गई हो और पीप निकल रहा हो, तो छूना अच्छा लगेगा क्या? नहीं छूएगा। यह सब अविचार के कारण ही है। मोह तो पागलपन है! अविचार दशा के कारण मोह है। मोह तो निरी जलन ही है।

अत: इस कुदरत के खेल में यदि सिर्फ ये तीन वेद नहीं होते तो संसार जीत जाते। ये तीन वेद नहीं होते तो क्या बिगड़ जाता था? लेकिन बहुत कुछ है इनकी वजह से। अहोहो! इतनी अधिक रमणता है न इनकी वजह से! इस विषय को वेद के रूप में नहीं रखा होता, एक कार्य की तरह, जैसे आहार लेते हैं, इस प्रकार कार्य की तरह रखा होता तो हर्ज नहीं था लेकिन इसे तो वेद की तरह रखा, वेदनीय के रूप में रखा। ये सारा झंझट ही तीन वेदों का है।

आप्तसूत्र- 742

तीन प्रकार का नशा: १. विषयों की इच्छा की मूर्च्छा, २. शराब पीना ३. कैफ का नशा अहंकार का कैफ, 'मैं, मैं' करने, वह।

हमारे जैसा तो किसी को भी समझ में नहीं आता और अगर बताएँ भी तो दूसरे दिन भूल जाते हैं। वर्ना विषय, वह सोचे-समझे बगैर की बात है। ये लोग देखा देखी से उसमें पड़े हुए है। सिर्फ लोक संज्ञा है वह और ज्ञानी की संज्ञा, यदि कभी ज्ञानी से पूछा जाए तो इसमें कोई पड़ेगा ही नहीं। एक भी इन्द्रिय इसे 'पास' नहीं करती। इसलिए ज्ञानियों ने कहा है कि जहाँ सुख नहीं है, वहाँ कहाँ सुख मान बैठे हो? लेकिन इस विषय में उसे मूर्च्छा बहुत है इसलिए मूर्च्छा को लेकर उसे भान नहीं रहता। जितना डेवेलपमेन्ट ज़्यादा, उतनी ही मूर्च्छा कम। इसमें क्या भोगना है? सबकुछ भोगकर ही आए हैं। जिसने कम भोगा है, उसे मूर्च्छा ज़्यादा है।

मूलत: तो खुद विषयी है, इसलिए कपड़े ज़्यादा मोहित करते हैं। खुद विषयी नहीं हो तो कपड़े मोहित नहीं कर पाएँगे। यहाँ अच्छे-अच्छे कपड़े बिछा दें तो क्या मोह उत्पन्न होगा? यानी खुद को विषय का मज़ा और आनंद है, उसकी इच्छा है, इसलिए वैसा मोह उत्पन्न होता है। जो लोग विषय की इच्छा से रहित हों, उन्हें कैसे मोह उत्पन्न होगा? यह मोह कौन उत्पन्न करता है? पिछले परिणाम मोह उत्पन्न करते हैं। तो उन्हें आप धो देना। बाकी कपड़े बेचारे क्या करें? पहले का बीज डाला हुआ है, यह उसी का परिणाम आया है। सभी पर मोह नहीं होता। जहाँ हिसाब हो वहीं मोह होता है। अन्यत्र मोह के नए बीज पड़ते ज़रूर है, लेकिन मोह नहीं होता। यह तो कपड़ों की वजह से मोह उत्पन्न होता है, नहीं तो अगर कपड़े निकाल दे तो काफी कुछ मोह कम हो जाएगा। सिर्फ अपनी उच्च जाति में ही मोह कम हो जाएगा। यह तो बेचारे को कपड़ों की वजह से भ्रांति रहती है और कपड़ों के बिना देखेगा तो यों ही वैराग आ जाएगा। तभी तो दिगंबरियों की ऐसी खोज है न!

मूर्च्छा चली जाए तो फिर हर्ज नहीं। मूर्च्छा ही निकालनी है। 'मेरी मूर्च्छा चली गई' ऐसा कहने से कुछ नहीं होगा, मूर्च्छा तो एक्ज़ेक्ट रूप से जानी ही चाहिए। और वह भी ज्ञानी पुरुष से टेस्ट करवा लेना चाहिए कि 'साहब, मेरी मूर्च्छा गई या नहीं, वह टेस्ट करके दीजिए।' वर्ना अंदर तो ऐसी ऐसी वकालत चलती है कि, 'बस, अब सारी मूर्च्छा चली गई है, अब कोई हर्ज नहीं है!' यानी वकालत करने वाले बहुत हैं न इसलिए जागृत रहना! जहाँ अपराध होने की संभावना हो,

ऐसी जगह पर से खिसक जाना। आत्मा तो दिया है और वह आत्मा असंग स्वभाव का है, निर्लेप स्वभाव का है। लेकिन अनंत जन्म से *पुद्गल* की खेंच है। आप अलग हुए, लेकिन *पुद्गल* की खेंच छोड़ती नहीं है न! वह खेंच जाती नहीं है न! स्त्री और पुरुष के आकर्षण में वह जागृति नहीं रखी तो *पुद्गल* की खेंच उसे अंधेरे में डाल देगी।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर जो राग होता है? वह क्या है?

दादाश्री : वह राग किस वजह से होता है? हकीकत में इसे समझा नहीं इसलिए। राग तो लोगों को ताश पर होता है, शराब पर होता है लेकिन हकीकत जानते ही वह छूट जाता है। इसलिए हकीकत जाननी पड़ेगी कि यह अहितकारी है, यह चीज़ अच्छी नहीं है, वास्तव में इसमें सुख है ही नहीं, यह तो भास्यमान सुख है, तो छूट जाएगा। तुझे कभी दाद हुआ है? उस दाद को खुजलाने में और इसमें बिल्कुल भी अंतर नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस संसार के लोगों ने तो, खुद उसमें सुख माना है इसीलिए सब को पकड़-पकड़कर कहते हैं कि इसी में मज़ा है, चलो!

दादाश्री : इन लोगों ने तो विषय के विज्ञापन छापे और सभी लोगों को उस तरफ मोड़ा और फिर भी देखो जलन, देखो जलन, तू मुंबई में जा तो सही! नंगे नाच-गाने देखते हैं, फिर भी जलन! आजकल तो सभी ओर यही तूफान चल रहा है न! और उसकी वज़ह से जलन भी बेहद पैदा हुई है। ऐसी जलन पैदा हुई है कि शराब भी पीनी पड़ती है। स्त्री रखनी पड़ती है। सबकुछ मिलता है फिर भी उसे शांति नहीं होती इसलिए फिर उसे मन में ऐसा होता है कि आत्महत्या कर लूँ। फिर पूरा दिन पीता रहता है। फिर देखो रात- दिन जलन, जलन और जलन! ऐसा होता है फिर!

बहुत जागृत रहना। शराब तो ऐसा है न कि 'मैं चंदूभाई हूँ', वह भान भी भूल जाता है न! तो फिर आत्मा तो भूल ही जाएगा न! अत: भगवान ने डरते रहने को कहा है। जिसे संपूर्ण अनुभवज्ञान हो जाए, उसे स्पर्श नहीं करता। फिर भी भगवान के ज्ञान को भी उखाड़कर बाहर फेंक दे! उसमें इतना भारी जोखिम है!

यदि पालन करने योग्य एकाध ही कानून हो तो मैं कहूँगा कि, 'ब्रह्मचर्य पालन करना!' इच्छाएँ यदि विराम पाएँ तो अंतर का वैभव प्रकट होगा। आत्मा तो ब्रह्मचारी ही है। मेरा दिया हुआ आत्मा ब्रह्मचारी ही है। अब 'आपको' चंदूभाई से कहना है कि 'भाई, तबियत अच्छी रखनी हो, संसार शांति से पूरा करना हो, तब यदि हो सके तो छ:-बारह महीने का ब्रह्मचर्यव्रत लिया जा सके तो अच्छा रहेगा। उससे शरीर स्वस्थ रहेगा।' यह तो ढाँचा ही 'लूज़' हो गया है।

मैं इन सभी को इसीलिए ब्रह्मचर्य के बारे में समझाता हूँ क्योंकि चारित्र की बुनियाद पर मोक्षमार्ग कायम है। आपको यदि खाना-पीना है, तो उसमें हर्ज नहीं है। सिर्फ परस्त्री, शराब और मांसाहार नहीं करना चाहिए। बाकी सबकुछ, पकौड़े-जलेबी खाने हों तो खाना, उसका हल ला दूँगा। अब इतनी छूट देने के बावजूद भी यदि आप अच्छी तरह से आज्ञा में नहीं रह पाओ तो क्या हो सकता है? अपने यहाँ तो क्या करने को कहा है कि 'तुझे जिससे शांति मिलती है, वैसा तू कर। तू अपनी पसंद की थाली दूसरों को मत देना, आराम से खाना।' आपको तो चारित्र की

बुनियाद मज़बूत रखनी है। मोक्ष में जाने के लिए वही एक मूल चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान का अहंकार किसलिए बाधक है?

दादाश्री : जानपने का अहंकार है न? ऐसा है कि अहंकार ऐसा होना चाहिए कि जिससे जानपना बढ़े। उसके बजाय यह अहंकार तो ऐसा है कि जानपने पर आवरण लाता है। जानपने के कारण वह अहंकार से अंधा हो जाता है। जिससे जानपना खो जाए, वह अहंकार बहुत नुकसान पहुँचाता है। सभी तरह से नुकसान पहुँचाता है।

खुद के जानना बाकी है फिर भी कहेगा, 'नहीं, मैं जानता हूँ।' इसलिए एक तो, जानने का फैफ आया तो आवरण चढ़ता है और वापस नए जानने की जिज्ञासाा टूट जाती है।

'मैं कुछ जानता हूँ' ऐसा यदि ज़रा सा भी विचार आए तो आवरण आ जाता है इसलिए वापस अजागृति ला देता है।

आप्तसूत्र- 3265

यह सुख कहाँ से आता है? विषयों में से, मान में से, लोभ में से.. कहाँ से आता है? यदि इनमें से किसी में भी से नहीं आता तो समझना कि यह समकित है।

जितना उल्टा चले उतना 'इगोइज़म' बढ़ता है और जितना 'इगोइज़म' विलय हो उतना सुख बरतता रहता है। हमारा 'इगोइज़म' खत्म हो गया है, इसलिए निरंतर सनातन सुख रहता है। दुःख में भी सुख रहे, वह खरा सुख है। कोई अपमान करे तब भी खुद को भीतर सुख लगता है, तब ऐसा होता है कि, 'अरे, यह कैसा सुख!'

आत्मा में परमसुख ही है लेकिन कलुषित भाव के कारण वह सुख आवरित हो जाता है। यह सुख कहाँ से आता है? विषयों में से? मान में से? क्रोध में से? लोभ में से? यदि इन किसी में से नहीं आए तो समझना कि यह समकित है।

जहाँ कुछ भी दुःख नहीं होता, वहाँ आत्मा है।

अगर आप मीठा खाकर ऊपर चाय पीएँ, तो फीकी लगेगी न? चाय के साथ अन्याय नहीं करते? चाय तो मीठी है लेकिन फीकी क्यों लगती है? क्योंकि उससे पहले मीठा चखा है। उसी तरह हम अनुपम मिठास वाला ज्ञान देते हैं। उसके बाद आपको संसार के सारे विषयी सुख मीठे होने पर भी फीके लगेंगे। लोगों का अनुभव है कि सर्दी का बुखार, मलेरिया वगैरह हो, तो खीर कड़वी लगती है। क्यों? क्योंकि उसका मुँह कड़वा है इसलिए कड़वा लगता है। उसमें खीर का क्या दोष? उसी तरह हमारे द्वारा दिए गए 'अक्रम ज्ञान' से जैसे-जैसे बुखार कम होगा, वैसे-वैसे पूरे संसार के सभी विषय नीरस होते हुए लगेंगे। विषयों का नीरस होते जाना थर्मामीटर है। खुद के बुखार का तो पता चलता है न!

आप्तसूत्र- 3629

'शुद्धात्मा में ही सुख है' यदि ऐसा हमें यथार्थ रूप से समझ में आ जाए तो विषय में सुख नहीं रहेगा।

विषय में कहीं सुख होता होगा? सुख तो भीतर है, लेकिन यह तो बाहर दूसरों में आरोप करते हैं इसलिए वहाँ पर सुख महसूस होता है। भ्रांतिरस से यह सब खड़ा हो गया है। भ्रांतिरस यानी क्या कि कुत्ता जिस तरह हड्डी चूसता है, वह आपने देखा है? हड्डी पर जो थोड़ा-बहुत माँस लगा हुआ हो वह तो मानो मिल गया लेकिन अब उसके बाद भी क्यों चूस रहा है? हड्डी तो लोहे की तरह मज़बूत होती है फिर खूब दबाए

न तब क्या होता है, कि उसके मसूड़े दबते हैं और फिर उनमें से खून निकलता है। कुत्ता समझता है वह खून हड्डी में से निकल रहा है इसलिए वापस खूब चबा-चबाकर हड्डी चूसता है। अरे! तू तेरा ही खून चूस रहा है। यह संसार भी इसी तरह चल रहा है। इसी तरह ये लोग भी हड्डियाँ ही चूस रहे हैं और खुद का ही खून चख रहे हैं।

बताओ, अब कितनी मुसीबत है! उसी तरह पूरा जगत् विषय में से सुख खोज रहा है। कुत्ते की तरह विषय में से सुख खोज रहा है, फिर कैसे सुख प्राप्त हो? सच्ची चीज़ होगी तो उसमें से सुख मिलेगा। यह सारा तो कल्पित सुख हैं, आरोपित सुख हैं। कड़ी धूप में अत्यंत थका हुआ आदमी, जब बबूल की छाँव में बैठे न, तो कहेगा मुझे बहुत ही आनंद आया था। विषय सुख भी वैसा ही आनंद है। आनंद तो निरुपाधि (बाह्य दु:खरहित) पद का होना चाहिए। ये सारे आनंद तुलनात्मक हैं। मनुष्य थका हुआ हो, कड़ी धूप से त्रस्त हो, उसके बाद यदि उसे कहें कि, 'बबूल की छाँव में ठीक लगेगा?' तब कहेगा, 'बहुत अच्छा लगेगा।' अब इस आनंद को आनंद कहेंगे ही कैसे?

लोगों ने विषय में सुख माना है। उसी प्रकार खुद ने भी इसमें सुख मान लिया है। इसमें बिल्कुल भी सुख मानने जैसा नहीं है। ज्ञानी की संज्ञा से देखे तो इसमें निरा दु:ख है इसलिए उसकी तो बात ही करने जैसी नहीं है, उसकी बात की जाए तो भी मनुष्य वैराग्य ले ले। 'ज्ञानी पुरुष' से यदि कभी ब्रह्मचर्य से संबंधित बातें सुने तो वैराग्य ही ले ले। यदि विषय का पूरी तरह से वर्णन किया जाए तो मनुष्य सुनते ही पागल हो जाए। इतना जोखिम वाला है वह। जिसे आंतरिक सुख है, वह अब्रह्मचर्य करेगा ही नहीं। ये तो आंतरिक दु:ख के कारण अब्रह्मचर्य करते हैं।

जगत् के लोगों ने कहा, 'परस्पर देवो भव:'। अरे, लेकिन कब तक परस्पर? अत: जो निरालंब सुख है उसकी तो बात ही अलग है न! अरे! शुद्धात्मा का जो सुख है उसकी भी बात अलग ही है न! 'मैं शुद्धात्मा हूँ' कहा कि बाहर के सारे विचार चले जाते हैं। जिसे 'शुद्धात्मा में ही सुख है', ऐसा यथार्थ रूप से समझ में आ जाए, उसे विषय में सुख नहीं लगेगा।

पुण्य से सभी इन्द्रियसुख मिलते हैं। उसमें फिर भोगने की लालसा की वजह से कपट खड़ा हो जाता है और कपट से संसार खड़ा है। जब तक विषय है, तब तक वह, यह आत्मसुख है और यह पौद्गलिक सुख है, इसका अंतर समझने नहीं देगा।

प्रश्नकर्ता : यानी ज्ञान के बाद सिर्फ 'बिलीफ' ही बदलनी है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन ऐसा है न 'राइट (सही) श्रद्धा पूरी बैठ गई,' ऐसा कब कहा जाएगा कि जब सारी रोंग (गलत) श्रद्धा खत्म हो जाए तब! अब मूल रोंग बिलीफ हमने खत्म कर दी लेकिन इस विषय में तो हम थोड़ी-बहुत रोंग श्रद्धा फ्रैक्चर कर देते हैं! बाकी क्या यह पूरा फ्रैक्चर करने हम फालतू बैठे हैं?

यानी विषय में से रस निर्मूल कब होगा कि जब पहले उसे खुद को ऐसा लगे कि 'यह मिर्च खा रहा हूँ, इससे मुझे तकलीफ होती है, ऐसे नुकसान करती है,' उसे ऐसा समझ में आना चाहिए। जिसे मिर्च का शौक़ हो, उसे जब गुण-अवगुण समझ में आ जाएँ और विश्वास हो जाए कि यह मुझे नुकसान ही करेगी तो वह शौक़ जाएगा। अब यदि हमें ऐसा यथार्थ रूप से समझ में आ जाए कि 'शुद्धात्मा में ही सुख है,' तो विषय में सुख रहेगा ही नहीं। फिर भी यदि विषय में सुख महसूस होता है वह पहले का रिएक्शन है!

प्रश्नकर्ता : विषय में सुख है, वह जो 'बिलीफ' पड़ी है, वह किस तरह निकलेगी?

दादाश्री : यह चाय मज़ेदार मीठी लगती है, वह अपना रोज़ का अनुभव है, लेकिन जलेबी खाने के बाद कैसी लगेगी?

प्रश्नकर्ता : फीकी लगेगी।

दादाश्री : तब उस दिन पता चल जाता है, बिलीफ बैठ जाती है कि जलेबी खाई हो तो चाय फीकी लगती है। इसी तरह जब आत्मा का सुख रहता है, तब अन्य सब फीका लगता है।

आप्तसूत्र- 2141

इस जगत् का न्याय कैसा है? कि जिन्हें लक्ष्मी से संबंधित विचार नहीं आते, विषय से संबंधित विचार नहीं आते, जो देह से निरंतर जुदा ही रहते हैं, उन्हें भगवान कहे बगैर नहीं रहते।

जिसे विषय तरफ के विचार कभी भी नहीं आते हों तो उसकी तो बात ही अलग है न, क्योंकि पिछले जन्म में भावना की हो तो विचार नहीं आते। हमें बाईस-बाईस साल से विषय का विचार ही नहीं आया, ज्ञान होने से पहले के दो सालों में तो विषय का विचार तक नहीं आया था। हमसे विषय-विकारी संबंध नहीं हुए थे। विकारी संबंध में हमें मिथ्याभिमान था कि हमसे यह नहीं हो सकेगा। हमारे कुल के अभिमान की वजह से इसकी रक्षा हो गई। ब्रह्मचर्य, वह तो सब से उच्च चीज़ है। उसके जैसी उच्च चीज़ कोई है ही नहीं न!

अब अनुपम पद छोड़कर उपमा वाला पद कौन ले? ज्ञान है तो पूरे जगत् की जूठन कौन छूएगा? जगत् को जो प्रिय हैं ऐसे विषय, ज्ञानी पुरुष को जूठन लगते हैं। इस जगत् का न्याय कैसा है कि जिसे लक्ष्मी से संबंधित विचार नहीं आते, विषय से संबंधित विचार नहीं आते, जो देह से निरंतर अलग ही रहता हो, उसे जगत् भगवान कहे बगैर नहीं रहता!

आप्तसूत्र- 684

सिर्फ, विषयों में पड़ने से जो रुक गया, वह भगवान बनकर रहा और विषय में जो लटका, वह सीधा नर्क में ही गया!

विषय के कारण ही सभी प्रकार की रुकावटें है न। यही महा रोग है!

अत: अब कुछ निबेड़ा लाओ। अनादि से मार खाते आए हो और उसमें ऐसा कौन सा सुख है? सात्विक रूप से पता नहीं लगाना चाहिए कि इसमें कोई सुख नहीं दिखता? बल्कि मूर्खता हो जाती है, फूलिशनेस हो जाती है। विषय से दूर रहा तो भगवान बनकर खड़ा रहेगा और विषय में यदि लटका तो अधोगति में नर्क में जाने पर भी अंत नहीं आएगा, ऐसा हमने ज्ञान से देखा है। अब आपको विश्वास हो गया न? आज आपको ऐसा ज्ञान हो गया न कि 'यह गलत हुआ है?' यह कोई ऐसा-वैसा ज्ञान नहीं है। 'यह गलत है' ऐसा ज्ञान हुआ, उसी को हम 'ज्ञान' कहते हैं। वापस पलटने लगा मतलब काम ही निकाल लेगा। यह तो, कोई राह दिखाने वाला होना चाहिए, यदि कोई राह दिखाने वाला नहीं हो तो क्या होगा?

'ज्ञानी पुरुष' को कितना सुंदर दिखाई देता होगा! सभी जगह शुद्धात्मा ही दिखाई देते हैं। हम नौवे गुणस्थानक में से जब दसवें गुणस्थानक में पहुँचे, तब से अरे! अपार सुख का अनुभव किया! उस सुख का एक छींटा भी यदि बाहर गिरे और मनुष्य उसे चखे तो सालभर के लिए वह परम सुखी हो जाएगा!

-जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

15 से 26 नवम्बर - बहुत समय से जिस महोत्सव का इंतजार था, परम पूज्य दादा भगवान का वह 111वाँ जन्म जयंती महोत्सव का, दादा भगवान परिवार के मुख्य सेन्टर अडालज त्रिमंदिर संकुल में भव्य रूप में आयोजन हुआ। इस महोत्सव में समग्र भारत के विविध राज्यों के महात्माओं के अलावा USA, UK, UAE, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड, सिंगापोर, मलेशिया, जर्मनी, स्पेन, ब्राज़िल, आर्जेन्टिना, स्वीट्जरलैन्ड और अन्य देशों से NRI तथा विदेशी महात्माओ ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूज्यश्री की भावना के अनुसार इस महोत्सव का मुख्य उदेश्य था, 'नए महात्माओं को नियमित सत्संग में जोड़ना और पूराने महात्माओं को सेवा के लिए प्रेरित करना।'

10 लाख से ज़्यादा महात्माओं और मुमुक्षुओं ने महोत्सव में भाग लिया। 14,000 सेवार्थियों ने इस महोत्सव में सेवा का लाभ लिया। महोत्सव के 8-10 महिने पहले विविध सेन्टरों के सेवार्थियों ने सत्संग में नियमित रूप से नहीं आने वाले महात्माओं को घर-घर जाकर पूज्यश्री द्वारा लिखित निमंत्रण पत्रिका का वितरण किया। जिसके फल स्वरूप बहुत से नए महात्माओं ने इस महोत्सव में भाग लिया। भोजनशाला में हर रोज़ लगभग 50,000 लोग दोपहर में और शाम को प्रासद ग्रहण करते थे। महोत्सव स्थल 35 लाख वर्ग फुट का था। जिसमें बारह थीमों पर आधारित थीम पार्क, ग्यारह थीमों वाला चिल्ड्रन पार्क, ओपन स्टेज ग्राउन्ड, रहने के लिए उतारा, भोजनशाला, फूड प्लाजा, बुक स्टॉल व पार्किंग का प्रबंध था। इन ग्यारह दिनों में महोत्सव के दौरान 18,000 लोग टेंट में, फ्लेट्स, डोरमेटरी, स्टॉप एण्ड स्टे वगैरह में रुके थे। विदेशी महात्माओं के लिए उनकी ज़रूरत के हिसाब से AC वाली टेंट सिटी का निर्माण हुआ था। प्रत्येक महात्मा के लिए महोत्सव स्थल पर पहुँचने के लिए सरक्यूलर रूट की बसों और गाड़ियों की व्यवस्था की गई थी।

महोत्सव के शुभारंभ के अवसर पर प्रोफेशनल कलाकारों द्वारा परम पूज्य दादाश्री के जीवन प्रसंगों पर आधारित नाटक की प्रस्तुति की गई व पूज्यश्री के हाथों 'ज्ञानी पुरुष' भाग-2 ग्रंथ का विमोचन हुआ। महोत्सव के दौरान पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा भारत की विविध भाषाओं में अनुवादित कुल 31 किताबों का विमोचन हुआ। महोत्सव के विविध आकर्षण जैसे कि इंटरनेशनल परेड, श्रीकृष्ण भगवान पर नृत्यनाटिका, श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा, भक्ति, गरबा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इंटरनेशनल परेड में प्रत्येक देश के महात्मा अपने देश की जानीमानी (विख्यात) कलाकृति को प्रदर्शित करती हुई झांकियाँ, वेशभूषा और संगीत पर नृत्य करते दिखाई दिए।

पूरे वर्ष के दौरान अडालज त्रिमंदिर में जिन-जिन सत्संग प्रवृत्तियों का आयोजन होता है, उनकी झलक मुमुक्षुओं-महात्माओं को इस महोत्सव में देखने को मिली। जैसे कि सोनेरी प्रभात, विवाहित भाईयों के लिए MMHT और विवाहित बहनों के लिए WMHT के विशेष सत्संग, माता-पिता, पति-पत्नी के लिए PMHT सत्संग, बच्चों और युवाओं के GNC के सत्संग, जन्माष्टमी और पारायण। 24 तारीख को आयोजित ज्ञानविधि में 8260 मुमुक्षओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जन्म जयंती के दिन पूज्यश्री ने श्री सीमंधर स्वामी तथा परम पूज्य दादाश्री का पूजन किया और जगत् कल्याण की भावना की सामायिक करवाई। उसके बाद हेलीकॉप्टर द्वारा आकाश से पुष्प वर्षा की गई। इस अवसर पर पूज्यश्री ने अगली जन्म जयंती और त्रिमंदिर की प्राणप्रतिष्ठा को एक साथ मुंबई में मनाए जाने की उद्घोषणा की। बाहर से आए हुए महात्मा-मुमुक्षुओं के लिए जन्म जयंती के दिन पूजन व दर्शन किए। सीमंधर सिटी और ATPL में रहने वाले महात्मोओं को 23 और 26 को पूज्यश्री के दर्शन का लाभ मिला। महोत्सव के दौरान गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय भाई रूपाणी, उप मुख्यमंत्री श्री नितिन भाई पटेल, पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान में मध्यप्रदेश के गवर्नर श्रीमती आनंदी बहन पटेल और महेसूल (भूमिकर) मंत्री श्री कौशिक भाई पटेल, श्रीमद् राजचंद्र आश्रम के आध्यात्मिक प्रमुख श्री नलिन भाई कोठारी भी पधारे थे।

26 तारीख को सेवार्थी सत्संग में कोआर्डिनेटर सेवार्थी महात्माओं ने अपने सेवा के अनुभव बताए। महोत्सव के समापन कार्यक्रम में प्रसिद्ध हास्य कलाकार सांईराम दवे का डायरा और भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ दोपहर 2-30 से 3 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE - **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

Pujya Deepakbhai's Germany-UK Satsang Schedule (2019)

UK: + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org, Germany: +49 700 32327474

Date	From	to	Event	Venue
25-Mar-19	08:00 PM	10:00 PM	SATSANG	Wolf-Ferrari-Haus Rathausplatz 2, 85521 Ottobrunn, Munich, **Germany**
26-Mar-19	07:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
29 Mar - 1 Apr	All day		Akram Vignan Event	**Willingen, Germany**
03-Apr-19	07:00 PM	09:30 PM	Aptaputra Satasang	Indian Association Oldham Schoefield Street, Hathershaw, Oldham, OL8 1QJ
04-Apr-19	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
05-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	**Maher Centre,** 15 Ravensbridge Drive, Leicester, LE4 0BZ
06-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
06-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
07-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
07-Apr-19	02:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
10-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	**Hariben Bachubhai Nagrecha Hall,** 198-202 Leyton Road, London, E15 1DT
11-Apr-19	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
12-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Middlesex **Harrow,** HA3 5BD
13-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
13-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
14-Apr-19	08:30 AM	12:30 PM	Small Swami Pratishta	
14-Apr-19	02:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
15-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
18-22 Apr	All day		UK SHIBIR	**Pre-registration required**

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

मुंबई

9 फरवरी (शनि) शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **10 फरवरी** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : निर्मल लाईफ स्टाईल मोल, LBS मार्ग, मुलुंड (वेस्ट). **संपर्क :** 9323528901

राजकोट

16 फरवरी (शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग** तथा **17 फरवरी** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : वीनुभाई परसाणा की वाडी, आहीर चौक के पास, बोलबाला, 80 फीट रींग रोड. **संपर्क :** 9879137971

जामनगर

22 फरवरी (शुक्र) शाम 7 से 10 - **सत्संग तथा 23 फरवरी** (शनि) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

स्थल : त्रिमंदिर, व्रजभूमि-1 के सामने, TGES स्कूल के पास, माणेकनगर, राजकोट रोड. **संपर्क :** 9924343687

जामनगर त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. 24 फरवरी 2019 (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह 9-30 से 1 तथा **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम 4-30 से 7-30

स्थल : त्रिमंदिर, व्रजभूमि-1 के सामने, TGES स्कूल के पास, माणेकनगर, राजकोट रोड. **संपर्क :** 9924343687

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

अडालज त्रिमंदिर

19 मार्च (मंगल), **पूज्य नीरुमाँ की 13वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

20 मार्च (बुध) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **21 मार्च** (गुरु) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

21 मार्च (गुरु) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2019

8 से 12 मई - सत्संग शिविर

9 मई - पूज्यश्री के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम

11 मई - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी मार्च 2019 के अंक में दी जाएगी। **रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।**

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

जनवरी 2019
वर्ष-14 अंक-3
अखंड क्रमांक - 159

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/38/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.